Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।श्रीः।।

233

शिवस्वरोदयः

(शिव-पार्वती-सम्वाद)

'स्वरप्रभा' भाषाटीका सहित

अनुवादक :

पं. हरेकृष्ण शास्त्री दातार

ब्रह्माघाट, वाराणसी

*

प्रकाशक :

रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

कचौड़ीगली, वाराणसी-221001

फोन : 2392471, 2392543

सन् २०१४ ई०]

मो0 : 9837019062
जुगल किशोर भीमसैन (बुकसेलर)
धार्मिक पुस्तकें, कर्म काण्ड पुस्तकें
धार्मिक फोटो, सीडी आदि उपलब्ध है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित
परिवर्धित संस्करण : २०१४ ई.

मुद्रक :
भारत प्रेस
कचौड़ीगली, वाराणसी-१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावित दो शब्द

मानवमात्र को सर्वविध सुख एवं आत्मतुष्टि सम्पन्न होने की दृष्टि से कुछ विशिष्ट भावनाएँ एवं कार्यों की नितान्त आवश्यकता होती है। उसके सभी कार्य केवल औपचारिक अथवा व्यावहारिक नहीं होते। उसे मानसिक शान्ति और चित्त सन्तोष के लिए आवश्यक निजी साधन की थोड़े-बहुत रूप में आवश्यकता होती है। उक्त साधना एक ही नहीं अपितु विभिन्न प्रकार की हो सकती है। अर्थात् मानव जीवन में आध्यात्मिक, मानसिक एवं नैतिक उत्थान का और चित्त सन्तोषपूर्ण सर्वविध सुख़मयता का अस्तित्व अनिवार्य है, इसमें सन्देह नहीं।

इस दृष्टि से मानव को वास्तविक मानव बनाने के लिये संसार में सर्वप्रथम भारतवर्ष में प्रयत्न हुए ऐसा यदि कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। हमारे प्राचीन ऋषियों ने वेदान्त, सांख्य, योग, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, पुराण आदि का निर्माण कर समस्त संसार के सम्मुख जीवन को अधिक-से-अधिक रूप में उन्नत एवं बौद्धिक शक्तिशाली बनाकर एक आदर्श स्थापित किया है। उन शास्त्रों के अतिरिक्त ज्योतिषशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, स्वरशास्त्र आदि अनेक शास्त्रों एवं विद्याओं का प्रादुर्भाव होकर उनके द्वारा भारतीय जीवन व्यावहारिकता को लेते हुए आध्यात्मिकता की ओर सुगमता से अग्रसर हो सका। किन्तु मध्यकाल में परकीय विचारधाराओं के प्रभाव के कारण भारतीयों को अपनी विद्याओं की ओर देखने की दृष्टि कुछ विकृत होकर उनके अध्ययन, विकास आदि की दृष्टि से हमारे प्रयत्न अपूर्ण हुए। परिणाम यह हुआ कि अनेक भारतीय विद्याएँ लुप्त हुईं एवं कुछ अविकसित रूप में आज भी विद्यमान हैं।

इन्हीं कुछ विद्याओं में से एक स्वर शास्त्र है ऐसा यदि कहा जाय तो वह अवास्तविक न होगा। इस शास्त्र के बहुत ही कम ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं। अन्य विद्याओं की तुलना में तो ये नहीं के बराबर है। फिर भी जो कुछ है, उनमें यह शिवस्वरोदय मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के सर्वांगीण अध्ययन के अनन्तर हमें यह सुलभता से ज्ञात हो सकता है कि भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से योगी, ज्योतिषियों एवं सर्वसाधारण के लिये उपयुक्त पुस्तकों में इस पुस्तक का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इसके द्वारा व्यावहारिक छोटे-से-छोटे कार्यों की सफलता के साथ-साथ योग सिद्धि, अमरता, तत्त्व साक्षात्कार आदि कठिन एवं गूढ़ बातों की सत्यता सिद्ध हुई और हो सकती है। बहुत ही कम संख्या में इस शास्त्र के मर्मज्ञ योगी आज भी विद्वान् हैं। किन्तु इतनी छोटी संख्या में इस शास्त्र का विकास जितना आवश्यक था न हो सका और न हो भी सकता है। इसलिये समाज के बुद्धिप्रधान वर्ग का ध्यान जब तक इस ओर आकृष्ट न होगा और वे इस शास्त्र को विकसित बनाने की दृष्टि से प्रयत्नशील न होंगे तब तक यह आशा करना व्यर्थ है कि हमारे इस अमूल्य विद्या का पुनरुद्धार एवं विकास हो सकेगा। सम्भव है कि, इस शास्त्र के सिद्धान्त प्रात्यक्षिक प्रयोगों की कसौटी पर सत्य सिद्ध होकर हमारे जीवन की कुछ कठिन समस्याओं को सुलभता से हल कर सकें। यह भी सम्भव है कि हमारा सामाजिक जीवन इस शास्त्र के ज्ञान के द्वारा सर्वविध सुखमयता की ओर प्रगति से अग्रसर हो सके। तात्पर्य यह है कि भारतीय समाज का ध्यान इस ओर आकृष्ट होकर भारतीयों के अन्य भारतीय विद्याओं के साथ-साथ इस विद्या के अध्ययन का समयानुरूप विकास आदि की दृष्टि से प्रयत्न प्रारम्भ हो तो निकट भविष्य में भारतीय समाज आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करने में अवश्य ही समर्थ हो सकेगा।

सर्वसाधारण लोगों को भी ज्ञात होने में यह ग्रन्थ सुलभ हो इसलिये यथाशक्ति सरल शब्दों में इसकी भाषा टीका की गयी है। यद्यपि इसकी संस्कृत टीकाएँ हैं, किन्तु उनके द्वारा संस्कृत भाषा न जानने वालों को लाभ न हो सकने के कारण एवं सर्व-साधारण लोगों में इस शास्त्र के ज्ञान का प्रसार हो इसलिये प्रकृत प्रयत्न किया गया है। कहीं-कहीं मूल ग्रंथ अत्यन्त क्लिष्ट होने के कारण सम्भव है कि भाषा में भाव पूर्णरूप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से न उतरे हों। अतः विद्वान् पाठक अपनी योग्यता के द्वारा उक्त त्रुटियों को सुधार कर अपने नीर-क्षीर विवेक का परिचय देंगे ऐसी आशा है।

यदि आज स्वतन्त्र भारत में स्वतन्त्र भारतीय दृष्टि से इस भारतीय शास्त्र का प्रचार होकर इसको विकसित एवं परिवर्धित करने के प्रयत्न होंगे तो मेरे ये स्वल्प प्रयत्न सफल होकर एवं निकट भविष्य में भारतीय विद्याओं का क्षेत्र अधिक विस्तृत होकर भारतीय सामाजिक जीवन एवं इसी प्रकार मानव जीवन भी बौद्धिक उन्नति के साथ सर्वविध वैभव सम्पन्न भी हो सकेगा।

विनयावनत—

ब्रह्माघाट, काशी **हरेकृष्ण शास्त्री दातार**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषयानुक्रमणिका

श्लोक-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१	मंगलाचरणम्	९
२	शंकरजी से पार्वतीजी का श्रेष्ठ ज्ञान और ब्रह्माण्ड की स्थिति आदि के विषय में प्रश्न	९
४	शंकरजी का पार्वतीजी को उत्तर	९
५	तत्त्वों के विषय में पार्वतीजी का प्रश्न	१०
६	शिवजी का उत्तर	१०
८	पंचतत्त्वों से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति	१०
१०	स्वर माहात्म्य का कथन	११
१३	सत् शिष्य का लक्षण	११
१४	असत् शिष्य का लक्षण	१२
१५	स्वर माहात्म्य वर्णन	१२
३२	नाड़ियों की संख्या का वर्णन	१५
३४	नाड़ियों की स्थिति एवं उनकी उत्तमता आदि का वर्णन	१५
३६	नाड़ियों के भेदों का वर्णन	१६
३८	नाड़ियों के शरीर में स्थान	१६
४२	वायुओं के स्थान एवं भेदों का वर्णन	१७
५०	नाड़ियों में सूर्य, चन्द्र आदि की स्थिति	१८
५६	नाड़ियों के अभ्यास से त्रिकाल ज्ञान	१९
५७	नाड़ियों का कार्य	२०
५८	दुष्ट और शुभ नाड़ियों का वर्णन	२०
६१	स्वरों के उदय का समय	२०
६६	स्वर के प्रवाह को अनुकूल रखने से योगसिद्धि	२१
६९	विशिष्ट दिनों में स्वरों के प्रवाह में विशेषसिद्धि	२२
७१	तत्त्वों का स्वरों में उदय	२३
७३	चन्द्र स्वर की राशियाँ	२३
७४	सूर्य स्वर की राशियाँ	२३
७५	स्वर भेद से गमनागमन निषेध	२३
७८	स्वर प्रवाह में कार्यों की शुभाशुभता	२४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्लोक-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
८२	विपरीत स्वरों का फल	२५
८६	स्वर प्रवाह के अनुसार कार्यों की सिद्धि और असिद्धि	२६
९७	पूर्ण स्वरों के प्रवाह में कार्यों की अनिष्टता	२८
१०२	इडा नाड़ी का फल	२९
११४	पिंगला नाड़ी का फल	३१
१२४	सुषुम्ना नाड़ी का फल	३३
१३६	सन्ध्या-वर्णन	३६
१३७	वेद वर्णन	३६
१३८	सन्धि वर्णन	३६
१३९	देवी का रहस्य के विषय में प्रश्न	३७
१४०	शिवजी का देवी को उत्तर	३७
१४१	तत्त्वों की महत्ता	३७
१४३	तत्त्वों के नाम	३७
१४५	आठ प्रकार का तत्त्वज्ञान	३८
१५०	षण्मुखी मुद्रा का वर्णन	३८
१५१	उक्त मुद्रा से तत्त्वों के रूप का ज्ञान	३९
१५२	तत्त्वों का स्वरूप जानने की दूसरी रीति	३९
१५३	तत्त्वों के लक्षण	३९
१५६	स्थानों से तत्त्वज्ञान	४०
१५७	स्वाद से तत्त्व ज्ञान	४०
१५८	गति से तत्त्वों का ज्ञान	४०
१६०	तत्त्वों के भेद से कार्यों के भेद	४०
१६४	विभिन्न तत्त्वों से युक्त स्वरों के स्वरूप का वर्णन	४१
१६९	तत्त्वों के स्वरूप और कार्यों का वर्णन	४२
१७४	तत्त्वों की शुभाशुभता	४३
१७५	तत्त्वों का दिशाओं में स्थान	४४
१७६	स्वर में तत्त्वोदय से शुभाशुभ फल वर्णन	४४
१८२	तत्त्वों में ग्रहों का स्थान	४५
१८५	ग्रहों के अनुसार यात्रा विषयक प्रश्नों के शुभाशुभ फल	४६
१९१	शरीर की उत्पत्ति का वर्णन	४७
१९२	पृथ्वी आदि तत्त्वों के गुणों का वर्णन	४७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्लोक-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
२०१	पृथ्वी आदि तत्त्वों के विभिन्न नक्षत्र	४९
२०७	तत्त्वों की प्रबलता का वर्णन	५०
२०९	लं, वं, रं, यं, हं, बीजों से पृथ्वी आदि पाँचों तत्त्वों के ध्यान का प्रकार	५०
२१५	त्रिकाल ज्ञान के बारे में देवी का प्रश्न	५१
२१६	शिवजी का उत्तर	५२
२२०	देवी का वायु, प्राण, देह आदि के बारे में प्रश्न पूछना	५२
२२१	शंकरजी का उत्तर	५३
२२२	वायु के गति का वर्णन	५३
२३०	स्वरों के प्रवाह और तत्त्वों के उदय के अनुसार कार्यों की सिद्धि या असिद्धि	५४
२३३	जीव स्वर से कर्त्तव्य कार्य	५५
२३५	युद्ध के लिये प्रस्थान करने के समय शुभाशुभ कार्य	५५
२५१	युद्ध के समय में स्वरों का फल	५८
२७६	स्वरों के द्वारा स्त्री वशीकरण	६३
२८६	गर्भ प्रकरण	६५
३०१	संवत्सर फल	६८
३१५	रोग प्रकरण	७१
३२६	काल प्रकरण	७३
३५८	छाया दर्शन प्रकरण	८०
३७६	प्राणायाम विधि	८३
३८२	षण्मुखी करण	८४
३८७	स्वरज्ञानयुक्त योगी को शिवसायुज्य की प्राप्ति	८५
३८८	स्वरज्ञान का महत्त्व	८६
३९५	ब्रह्मज्ञान का उपाय	८७
*	शिवपञ्चाक्षर-स्तोत्रम्	८८
*	रुद्राष्टकम्	८९
*	श्रीशिवरामाष्टकम्	९०
*	विश्वनाथष्टक	९१
*	शिवस्तुति-चालीसा	९३
*	शिवजी की आरती	९५-९६

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।।श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः।।

शिवस्वरोदयः

भाषाटीकासहितः

मङ्गलाचरणम्

महेश्वरं नमस्कृत्य शैलजां गणनायकम्।
गुरुं च परमात्मानं भजे संसारतारणम्।।१।।

श्रीशंकरजी, पार्वतीजी तथा गणेशजी को प्रणाम कर इस अनित्य विश्व से उद्धार करने वाले गुरु एवं परमात्मा का मैं भजन करता हूँ।।१।।

देवी उवाच

देवदेव महादेव कृपां कृत्वा ममोपरि।
सर्वसिद्धिकरं ज्ञानं कथयस्व मम प्रभो।।२।।

पार्वतीजी ने कहा—हे देवों के देव महादेव! सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त करा देनेवाले श्रेष्ठ ज्ञान का उपदेश आप मुझको कृपा करके दीजिये।।२।।

कथं ब्रह्माण्डमुत्पन्नं कथं वा परिवर्त्तते।
कथं विलीयते देव वद ब्रह्माण्डनिर्णयम्।।३।।

हे देवाधिदेव! यह संसार किस प्रकार उत्पन्न हुआ? इसका परिवर्तन क्यों होता है? एवं इसका विलय अर्थात् नाश किस प्रकार होता है? इस संसार का वास्तविक स्वरूप एवं महत्त्व आप कहिये।।३।।

शिव उवाच

तत्त्वाद् ब्रह्माण्डमुत्पन्नं तत्त्वेन परिवर्त्तते।
तत्त्वे विलीयते देवि तत्त्वाद् ब्रह्माण्डनिर्णयः।।४।।

महादेवजी ने कहा—हे देवी! यह संसार तत्त्वों से उत्पन्न हुआ है और इन तत्त्वों के द्वारा ही इसका परिवर्तन, पालन एवं उन्हीं में नाश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी होता है। इस प्रकार इस संसार के विषय में निर्णय उक्त तत्त्वों के द्वारा ही होता है।।४।।

देवी उवाच

तत्त्वमेव परं मूलं निश्चितं तत्त्ववादिभिः।
तत्त्वस्वरूपं किं देव! तत्त्वमेव प्रकाशय।।५।।

पार्वतीजी ने कहा—हे महेशजी! ज्ञानी तत्त्ववादियों ने जिनको तत्त्वों का स्वरूप यथार्थतः ज्ञात है, निश्चित किया है कि इस संसार के मूल तत्त्व ही हैं। अतः उन तत्त्वों का स्वरूप क्या है? इसको कहिये और उस तत्त्व को प्रकाशित भी कीजिये।।५।।

शिव उवाच

निरंजनो निराकार एको देवो महेश्वरः।
तस्मादाकाशमुत्पन्नमाकाशाद्वायुसंभवः।।६।।

महादेवजी ने कहा—जो एक निर्विकार नित्य एवं आकार रहित परमात्मा है उससे आकाश की उत्पत्ति हुई और आकाश से वायु की।।६।।

वायोस्तेजस्ततश्चापस्ततः पृथ्वीसमुद्भवः।
एतानि पञ्चतत्त्वानि विस्तीर्णानि च पञ्चधा।।७।।

वायु से तेज (अग्नि) की उत्पत्ति हुई और तेज से जल की एवं जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार ये पाँचों तत्त्व विभिन्न पाँच प्रकार से इस संसार में फैले हैं।।७।।

ताभ्यां ब्रह्माण्डमुत्पन्नं तैरेव परिवर्त्तते।
विलीयते च तत्रैव तत्रैव रमते पुनः।।८।।

उक्त पञ्चतत्त्वों के द्वारा ही यह संसार निर्मित हुआ है, उन्हीं तत्त्वों के द्वारा इसका पालन एवं उन्हीं में, इसका विलय (नाश) भी होता है। उन्हीं पञ्चतत्त्वों में ही फिर यह रमता है।।८।।

पञ्चतत्त्वमये देहे पञ्चतत्त्वानि सुन्दरि!।
सूक्ष्मरूपेण वर्त्तन्ते ज्ञायन्ते तत्त्वयोगिभिः।।९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे सुन्दरि! उक्त पञ्चतत्त्वों से बने हुए एवं पञ्चतत्त्वों से परिपूर्ण इस शरीर में सूक्ष्म रूप से पाँचों तत्त्व विद्यमान हैं। उन सूक्ष्म तत्त्वों को तत्त्वज्ञ योगी ही जानते हैं।।९।।

अथ स्वरं प्रवक्ष्यामि शरीरस्थ-स्वरोदयम्।
हंसचारस्वरूपेण भवेज्ज्ञानं त्रिकालजम्।।१०।।

अब शरीर में स्थित अकारदि स्वरों के उच्चारण में कारण जो मुख्य स्वर है, उनको हम कहते हैं। उक्त स्वरों के ज्ञान के द्वारा 'हंस चार' अर्थात् श्वास को लेते समय 'स:' और श्वास को छोड़ते समय 'अहं' इस प्रकार का उच्चारण होकर उससे भूत, भविष्य और वर्तमान काल का भी ज्ञान होता है।।१०।।

गुह्याद् गुह्यतरं सारमुपकारं प्रकाशनम्।
इदं स्वरोदयं ज्ञानं ज्ञानानां मस्तकं मणिः।।११।।

गुप्त से भी अत्यन्त गुप्त ऐसे सार (ज्ञान) एवं लाभ (उपकार) को प्रकट करने वाला स्वरोदय का ज्ञान सभी ज्ञानों में श्रेष्ठ है।।११।।

सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरं ज्ञानं सुबोधं सत्यप्रत्ययम्।
आश्चर्यं नास्तिके लोके आधारं त्वास्तिके जने।।१२।।

यह स्वरोदय का ज्ञान यद्यपि सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, फिर भी यह जानने में सुलभ और सत्य का ज्ञान करानेवाला है। यह नास्तिकों के लिये आश्चर्य की वस्तु है और आस्तिकों को सहायता देने वाला है।।१२।।

शिष्यलक्षणम्

शान्ते शुद्धे सदाचारे गुरुभक्त्यैकमानसे।
दृढचिते कृतज्ञे च देयं चैव स्वरोदयम्।।१३।।

शिष्य का लक्षण—शान्त, शुद्ध, सदाचारी, गुरु का भक्त, दृढ़चित्त और उपकारों को माननेवाला (कृतज्ञ) शिष्य को ही इस स्वरोदय का ज्ञान देना चाहिये।।१३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुष्टे च दुर्जने क्रुद्धे नास्तिके गुरुतल्पगे।
हीनसत्त्वे दुराचारे स्वरज्ञानं न दीयते।।१४।।

दुष्ट, दुर्जन, क्रोधी, नास्तिक, गुरु-पत्नीगामी, शौर्यहीन, दुराचारी और मूर्ख शिष्य को इस स्वर का ज्ञान कभी न देना चाहिये।।१४।।

शृणु त्वं कथितं देवि! देहस्थं ज्ञानमुत्तमम्।
येन विज्ञानमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रजायते।।१५।।

हे देवि! तुम शरीर में रहने वाले इस उत्तम ज्ञान को सुनो। इसे अब मैं कहता हूँ। इस ज्ञान को प्राप्त करने से सम्पूर्ण ज्ञानों की प्राप्ति हो जाती है, अर्थात् मनुष्य सर्वज्ञ हो जाता है।।१५।।

स्वरे वेदाश्च शास्त्राणि स्वरे गान्धर्वमुत्तमम्।
स्वरे च सर्वत्रैलोक्यं स्वरमात्मस्वरूपकम्।।१६।।

इस स्वर में ही सम्पूर्ण वेद है। इसी में शास्त्र भी अन्तर्भूत है। इसी प्रकार संगीत विद्या भी इसी में विद्यमान है। इतना ही नहीं, सम्पूर्ण त्रैलोक्य भी इसी स्वर में है और स्वर आत्मस्वरूप ही है।।१६।।

स्वरहीनश्च दैवज्ञो नाथहीनं यथा गृहम्।
शास्त्रहीनं यथा वक्त्रं शिरोहीनं च यद्वपुः।।१७।।

इस स्वरज्ञान में विहीन ज्योतिषी उसी प्रकार अपूर्ण विद्वान् होता है, जिस प्रकार मालिक के बिना घर, शास्त्रविहीन मुख और मस्तकरहित शरीर होता है। अर्थात् ज्योतिषी को स्वरज्ञान की बहुत आवश्यकता होती है।।१७।।

नाडीभेदं तथा प्राणतत्त्वभेदं तथैव च।
सुषुम्नामिश्रभेदं च यो जानाति स मुक्तिगः।।१८।।

नाड़ियों के भेद, प्राणतत्त्वों के भेद तथा पिंगला, इडा, सुषुम्ना आदि नाड़ियों का मिश्रभेद जो जानता है, वह मोक्ष प्राप्त करता है।।१८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साकारे वा निराकारे शुभं वायुबलात्कृते।
कथयन्ति शुभं केचित् स्वरज्ञानं वरानने!।।१९।।

हे सुन्दरि! साकार अथवा निराकार शुभ वायु के बल से कुछ लोग स्वर का ज्ञान प्राप्त करना शुभ कहते हैं।।१९।।

ब्रह्माण्डखण्डपिण्डाद्याः स्वरेणैव हि निर्मिताः।
सृष्टिसंहारकर्त्ता च स्वरः साक्षान्महेश्वरः।।२०।।

इस स्वर के ही द्वारा यह ब्रह्माण्ड एवं उनके अंश और पिण्ड (देह) उत्पन्न हुए हैं। इतना ही नहीं संसार की सृष्टि और संहार को करने वाला स्वर ही साक्षात् शिवरूप भी है।।२०।।

स्वरज्ञानात्परं गुह्यं स्वरज्ञानात्परं धनम्।
स्वरज्ञानात्परं ज्ञानं न वा दृष्टं न वा श्रुतम्।।२१।।

स्वर ज्ञान से श्रेष्ठ कोई गुप्त वस्तु, स्वर ज्ञान से ज्ञेष्ठ धन-सम्पत्ति और स्वर ज्ञान से उत्तम ज्ञान भी न देखा गया है न सुना ही गया है।।२१।।

शत्रुं हन्यात्स्वरबले तथा मित्रसमागमः।
लक्ष्मीप्राप्तिः स्वरबले कीर्तिः स्वरबले सुखम्।।२२।।

शत्रुओं का नाश स्वर के बल से होता है। इसी प्रकार स्वर बल के द्वारा मित्रों की प्राप्ति, सम्पत्ति की प्राप्ति, यश का लाभ और सुख की प्राप्ति होती है।।२२।।

कन्याप्राप्तिः स्वरबले स्वरतो राजदर्शनम्।
स्वरेण देवतासिद्धिः स्वरेण क्षितिपो वशः।।२३।।

स्वर बल के द्वारा सन्तति की प्राप्ति होती है। स्वर बल से ही राजा का दर्शन होता है। इसी तरह स्वर बल से देवता प्रसन्न होते हैं और राजा भी वश में हो जाता है।।२३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वरेण गम्यते देशो भोज्यं स्वरबले तथा।
लघुदीर्घं स्वरबले मलं चैव निवारयेत्।।२४।।

स्वर की प्रबलता के आधार पर अन्य देशों में गमन करना चाहिये। स्वर बल में ही अच्छी प्रकार भोजन भी करना चाहिये और मलमूत्र का त्याग करना चाहिये।।२४।।

सर्वशास्त्रपुराणादि स्मृतिवेदाङ्गपूर्वकम्।
स्वरज्ञानात्परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिद्वरानने।।२५।।

हे सुमुखि! सभी दर्शन, शास्त्र, अठारह पुराण, सम्पूर्ण स्मृतियाँ और वेदों के अंग स्वर रूप ही हैं। स्वर से श्रेष्ठ तत्त्व कोई नहीं है।।२५।।

नामरूपादिकः सर्वो मिथ्या सर्वेषु विभ्रमः।
अज्ञानमोहिता मूढा यावत्तत्त्वं न विद्यते।।२६।।

इस स्वर रूप महान् तत्त्व का ज्ञान जब तक मूढ़ लोगों को नहीं होता, तब तक इन लोगों का नाम और रूप आदि में असत्य ज्ञान या भ्रम होता है और ये अज्ञान से सर्वथा मोहित रहते हैं।।२६।।

इदं स्वरोदयं शास्त्रं सर्वशास्त्रोत्तमोत्तमम्।
आत्मघटप्रकाशार्थं प्रदीपकालकोपमम्।।२७।।

सम्पूर्ण शास्त्रों में श्रेष्ठ यह स्वरोदय शास्त्र है, आत्मा को प्रकाशित करने वाला यह एक महादीपक ही है।।२७।।

यस्मै कस्मै परस्मै वा न प्रोक्तं प्रश्नहेतवे।
तस्मादेतत्स्वयं ज्ञेयमात्मनो वात्मनाऽऽत्मनि!।२८।।

चाहे जिस-किसी को इस शास्त्र का ज्ञान न देना चाहिये। इस शास्त्र का ज्ञान अपने चित्त, वाणी और बुद्धि में ही रखना चाहिये।।२८।।

न तिथिर्न च नक्षत्रं न वारो ग्रहदेवताः।
न च विष्टिव्यतीपातो वैधृत्याद्यास्तथैव च।।२९।।

तिथि, नक्षत्र, वार, ग्रहदेवता, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति आदि योगों से स्वरबल से होने वाले शुभफल का नाश नहीं होता।।२९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुयोगो नास्तिको देवि! भविता वा कदाचन।
प्राप्ते स्वरबले शुद्धे सर्वमेव शुभं फलम्।।३०।।

हे देवि! शुद्ध स्वर का बल प्राप्त होने पर सभी शुभफल प्राप्त हो जाते हैं। इस स्वरशास्त्र में किसी भी प्रकार का बुरा योग न था, और न कभी होगा ही।।३०।।

देहमध्ये स्थिता नाड्यो बहुरूपाः सुविस्तराः।
ज्ञातव्याश्च बुधैर्नित्यं स्वदेहज्ञानहेतवः।।३१।।

पण्डितों को अपने शरीर में फैली हुई अनेक रूप की नाड़ियों को अपने शरीर के ज्ञान के लिये अवश्य जानना चाहिये।।३१।।

नाभिस्थान-स्कन्धोर्ध्वमंकुरादेव निर्गताः।
द्विसप्तति-सहस्राणि देहमध्ये व्यवस्थिताः।।३२।।

नाभिस्थान से लेकर कन्धे तक जो मेरुदण्ड या अंकुर है, उसके आसपास शरीर में बहत्तर हजार नाड़ियाँ होती हैं।।३२।।

नाडीस्था कुण्डली शक्तिर्भुजङ्गकारशायिनी।
ततो दशोर्ध्वगा नाड्यो दशैवाधः प्रतिष्ठिताः।।३३।।

नाभि में रहनेवाले कुण्डली चक्र के ऊपर दस और नीचे भी दस नाड़ियाँ होती हैं। कुण्डली चक्र का स्वरूप सर्प की कुण्डली की तरह है।।३३।।

द्वे द्वे तिर्यग्गते नाड्यश्चतुर्विंशति-सङ्ख्यया।
प्रधाना दश नाड्यस्तु दश वायुप्रवाहकाः।।३४।।

चौबीस नाड़ियों की संख्या में नाड़ियों के दो समूह तिरछे गये हैं। उनमें दस नाड़ियाँ प्रधान हैं, अन्य दस नाड़ियाँ वायु को वहन करने वाली हैं।।३४।।

तिर्यगूर्ध्वास्तथा नाड्यो वायुदेहसमन्विताः।
चक्रवत्संस्थिता देहे सर्वाः प्राणसमाश्रिताः।।३५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊपर, नीचे तथा तिरछी नाड़ियाँ वायु और शरीर की आधार हैं। वे नाड़ियाँ चक्र की तरह इस तरह शरीर में रहती हैं और वे प्राण पर ही आश्रित हैं॥३५॥

तासां मध्ये दश श्रेष्ठा दशानां तिस्त्र उत्तमाः।

इडा च पिंगला चैव सुषुम्ना च तृतीयका॥३६॥

पहले कही हुई नाड़ियों में दस प्रधान नाड़ियाँ है। उन दस नाड़ियों में भी तीन उत्तम हैं। इनका नाम इडा, पिंगला और सुषुम्ना है॥३६॥

गांधारी हस्तिजिह्वा च पूषा चैव यशस्विनी।

अलंबुषा कुहूश्चैव शङ्खिनी दशमी तथा॥३७॥

उक्त तीनों नाड़ियों से भिन्न गांधारी, हस्तिजिह्वा, पूषा, यशस्विनी, अलंबुषा, कुहू और शंखिनी इस प्रकार सात (सब मिलाकर दस) नाड़ियाँ (प्रधान) हैं॥३७॥

इडा वामे स्थिता भागे पिङ्गला दक्षिणे स्मृता।

सुषुम्ना मध्यदेशे तु गांधारी वामचक्षुषि॥३८॥

शरीर में बायीं ओर इडा नाड़ी विद्यमान हैं, इसी प्रकार पिंगला दाहिनी ओर, सुषुम्ना बीच में और गांधारी बायीं आँख में स्थित हैं॥३८॥

दक्षिणे हस्तिजिह्वा च पूषा कर्णे च दक्षिणे।

यशस्विनी वामकर्णे आनने चाप्यलंबुषा॥३९॥

दाहिनी आँख में हस्तिजिह्वा नामक नाड़ी रहती है। पूषा दक्षिण कान में, यशस्विनी बायें कान में और मुख में अलंबुषा नामक नाड़ी स्थित है॥३९॥

कुहूश्च लिंगदेशे तु मलस्थाने तु शंखिनी।

एवं द्वारं समाश्रित्य तिष्ठन्ति दशनाडिकाः॥४०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुहू नामक नाड़ी लिंग देश में रहती है और शंखिनी गुदास्थान में स्थित है। इस तरह देह के दश द्वारों के आधार से उक्त दस नाड़ियाँ रहती हैं॥४०॥

इडा पिङ्गला सुषुम्ना च प्राणमार्गे समाश्रिताः।
एता हि दशनाड्यस्तु देहमध्ये व्यवस्थिताः॥४१॥

इडा, पिंगला और सुषुम्ना प्राण के मार्ग पर स्थित हैं। पहले कही गयीं ये दस नाड़ियाँ शरीर में विद्यमान हैं॥४१॥

नामानि नाडिकानां तु वातानां तु वदाम्यहम्।
प्राणाऽपानः समानश्च उदान व्यान एव च॥४२॥

मुख्य नाड़ियों के नाम पहले ही कहे जा चुके हैं, अब वायुओं के नाम कहता हूँ। प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये पाँच मुख्य वायु हैं॥४२॥

नागः कूर्मोऽथ कृकलो देवदत्तो धनञ्जयः।
हृदि प्राणो वसेन्नित्यमपानो गुदमण्डले॥४३॥

नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये पाँच उपप्राण हैं। हृदय में प्राण नामक वायु रहता है। गुदास्थान में अपान वायु रहता है॥४३॥

समानो नाभिदेशे तु उदानः कण्ठमध्यगः।
व्यानो व्यापी शरीरेषु प्रधानो दश वायवः॥४४॥

नाभि देश में समान नामक वायु रहता है और कंठ के मध्य में उदान वायु रहता है। सम्पूर्ण शरीर में व्यान नामक वायु फैला है। इस प्रकार ये दस वायु प्रधान हैं॥४४॥

प्राणाद्याः पञ्च विख्याता नागाद्याः पञ्च वायवः।
तेषामपि च पञ्चानां स्थानानि च वदाम्यहम्॥४५॥

प्राण आदि पाँच वायुओं के स्थान पहले कहे जा चुके हैं। अब नाग आदि पाँच वायुओं के स्थान कहे जाते हैं॥४५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उद्गारे नाग आख्यातः कूर्म उन्मीलने स्मृतः।
कृकलो क्षुतकृज्ज्ञेयो देवदत्तो विजृम्भणे।।४६।।

डकार के वायु को नाग कहा गया है। जिस वायु के द्वारा नेत्रों के पलक खुलते एवं बन्द होते हैं, उसको कूर्म कहा जाता है। छींक में कारण कृकल वायु है। जँभाई का कारण देवदत्त वायु है।।४६।।

न जहाति मृतं वापि सर्वव्यापी धनञ्जयः।
एते नाडीषु सर्वासु भ्रमते जीवरूपिणः।।४७।।

धनंजय नामक वायु सारे शरीर में व्याप्त है। इसीलिये यह मृत शरीर को भी नहीं त्यागता है। उक्त दस वायु शरीर की सभी नाड़ियों में जीवरूप धारणकर भ्रमण करते हैं।।४७।।

प्रकटं प्राणसञ्चारं लक्षयेद् देहमध्यतः।
इडापिङ्गलासुषुम्नाभिर्नाडीभिस्तिसृभिर्बुधः।।४८।।

शरीर के बीच में प्राण वायु की गति स्पष्ट प्रतीत होती है। उसे विद्वान् इडा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ियों द्वारा जानें।।४८।।

इडा वामे च विज्ञेया पिंगला दक्षिणे स्मृता।
इडानाडी स्थिता वामे ततो व्यस्ता च पिंगला।।४९।।

शरीर के दक्षिण भाग में पिंगला और वामभाग में इडा रहती है। इडा बायें फेरे से और पिंगला दाहिने फेरे से रहती है।।४९।।

इडायां तु स्थितश्चन्द्रः पिङ्गलायां च भास्करः।
सुषुम्ना शम्भुरूपेण शम्भुर्हहस्वरूपतः।।५०।।

इडा नाड़ी में चन्द्रमा और पिंगला में सूर्य रहता है, सुषुम्ना में शिव हंसरूप में रहते हैं। इसीलिये सुषुम्ना को शिवस्वरूप ही कहा गया है।।५०।।

हकारो निर्गमे प्रोक्तः सकारेण प्रवेशनम्।
हकारः शिवरूपेण सकारः शक्तिरुच्यते।।५१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्वांस लेते समय 'स' कार का और श्वांस छोड़ते समय 'ह' कार का उच्चारण होता है। हकार शिव रूप और सकार शक्ति रूप कहा गया है।।५१।।

शक्तिरूपः स्थितश्चन्द्रो वामनाडीप्रवाहकः।
दक्षनाडी प्रवाहश्च शम्भुरूपो दिवाकरः।।५२।।

बायीं नाड़ी का परिचालक चन्द्र शक्तिरूप से स्थित है। इसी प्रकार दाहिनी नाड़ी को प्रवाहित करनेवाला सूर्य शंकर रूप में रहते हैं।।५२।।

श्वासे सकारसंस्थे तु यद्दानं दीयते बुधैः।
तद्दानं जीवलोकेऽस्मिन् कोटिकोटिगुणं भवेत्।।५३।।

विद्वान् लोगों द्वारा सकार युक्त बायें स्वर में जो दान दिया जाता है, उससे इस मर्त्य लोक में कोटि गुणित फल प्राप्त होता है।।५३।।

अनेन लक्षयेद्योगी चैकचित्तः समाहितः।
सर्वमेवं विजानीयान्मार्गे वै चन्द्रसूर्ययोः।।५४।।

इस प्रकार एकाग्रचित्त और शान्त होकर योगी को देखना चाहिए और सभी पदार्थों को सूर्य और चन्द्र के अर्थात् पिंगला और इडा के मार्ग में देखना चाहिए।।५४।।

ध्यायेत्तत्त्वं स्थिरे जीव अस्थिरे न कदाचन।
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य महालाभो जयस्तया।।५५।।

मनुष्य को स्थिर होकर इस तत्त्व का ध्यान करना चाहिए। अस्थिर होकर कभी ध्यान न करे। ऐसा करने से स्थिर मनुष्य को इष्ट की सिद्धि, बहुत लाभ और विजय प्राप्त होता है।।५५।।

चन्द्रसूर्यसमभ्यासं ये कुर्वन्ति सदा नराः।
अतीतानागतज्ञानं तेषां हस्तगतं भवेत्।।५६।।

जो लोग चन्द्र (इडा) और सूर्य (पिंगला) का नियमपूर्वक अभ्यास सर्वदा करते हैं, उनको भविष्य और भूतकाल का ज्ञान सहज ही प्राप्त होता है।।५६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वामे चामृतरूपा स्याज्जगदाप्यायनं परम्।
दक्षिणे चरभागेन जगदुत्पादयेत् सदा।।५७।।

शरीर में बायीं ओर रहनेवाली इडानाड़ी अमृत रूप होने के कारण वह संसार को पुष्ट करने वाली होती है। दक्षिण भाग में रहने वाली पिंगलानाड़ी से सदा संसार की उत्पत्ति की जाती है।।५७।।

मध्यमा भवति क्रूरा दुष्टा सर्वत्र कर्मसु।
सर्वत्र शुभकार्येषु वामा भवति सिद्धिदा।।५८।।

शरीर के मध्य भाग में रहनेवाली सुषुम्ना नाड़ी सब कार्यों के लिए क्रूर, दुष्ट अर्थात् विघातक है। सभी शुभ कार्यों में बायीं नाड़ी (इडा) सिद्धि प्राप्त करा देने वाली है।।५८।।

निर्गमे तु शुभा वामा प्रवेशे दक्षिणा शुभा।
चन्द्रः समः सुविज्ञेयो रविस्तु विषमः सदा।।५९।।

बाहर जाते समय बायीं नाड़ी (इडा) शुभ होती है। लौटते या प्रवेश करते समय दाहिनी (पिंगला) शुभ कही गयी है। चन्द्रमा को सदा सम और सूर्य को विषम जानना चाहिये।।५९।।

चन्द्रः स्त्री पुरुषः सूर्यश्चन्द्रो गौरोऽसितो रविः।
चन्द्रनाडीप्रवाहेण सौम्यकार्याणि कारयेत्।।६०।।

चन्द्रनाड़ी (इडा) को स्त्री और सूर्य नाड़ी (पिंगला) को पुरुष माना गया है। चन्द्र नाड़ी का रंग सफेद और सूर्य नाड़ी का वर्ण काला है। इसलिये चन्द्रनाड़ी के प्रवाह के समय ही शुभ कार्यों को करना अच्छा होता है।।६०।।

सूर्यनाडीप्रवाहेण रौद्रकर्माणि कारयेत्।
सुषुम्नायाः प्रवाहेण भुक्ति-मुक्तिफलानि च।।६१।।

सूर्यनाड़ी (पिंगला) के प्रवाह के समय क्रूर कार्यों को करना चाहिये। सुषुम्ना नाड़ी के प्रवाह के समय भोग और मोक्ष दायक कार्य करना अच्छा है।।६१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदौ चन्द्रः सिते पक्षे भास्करो हि सितेतरे।
प्रतिपत्तो दिनान्याहुस्त्रीणि त्रीणि कृतोदये।।६२।।

महीने के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से तीन दिन तक पहले चन्द्रस्वर (बायाँ) का और तीन दिन के हिसाब से आगे सूर्य स्वर का उदय होता है। इसके विपरीत कृष्ण पक्ष में पहले तीन दिनों में सूर्य स्वर (दाहिना) का उदय और बाद में चन्द्रस्वर का उदय होता है।।६२।।

सार्धाद्विघटिके ज्ञेयः शुक्ले कृष्णे शशी रविः।
वहत्येकदिनेनैव यथा षष्टिघटीः क्रमात्।।६३।।

शुक्ल पक्ष में सूर्योदय से लेकर अढ़ाई घड़ी तक चन्द्र स्वर का उदय होता है, कृष्ण पक्ष में उसी प्रकार पहले अढ़ाई घड़ी तक सूर्य स्वर का उदय होता है। एक ही दिन में उक्त प्रकार से अढ़ाई घड़ी के हिसाब से चन्द्र और सूर्य स्वर चलते हैं।।६३।।

वहेयुस्तद् घटीमध्ये पञ्चतत्त्वानि निर्दिशेत्।
प्रतिपत्तो दिनान्याहुर्विपरीतो विवर्जयेत्।।६४।।

उन घड़ियों के बीच में पाँच तत्त्व प्रवाहित होते हैं। पहले कहे गये नियम के अनुसार चन्द्रस्वर और सूर्य स्वर प्रवाहित हों तो कार्यों को प्रारम्भ करे और विपरीत प्रवाह में कार्यों को प्रारम्भ न करे।।६४।।

शुक्लपक्षे भवेद्वामा कृष्णपक्षे च दक्षिणा।
जानीयात्प्रतिपत्पूर्वं योगी तद्गतमानसः।।६५।।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को प्रारम्भ बायीं नाड़ी (इडा) के और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को पहले दाहिनी नाड़ी (पिंगला) के प्रवाह को एकाग्रचित होकर योगी जानें। अर्थात् समय-समय पर चन्द्र और सूर्य स्वर के प्रवाह को योगियों को जानना चाहिये।।६५।।

शशाङ्कं वारयेद्रात्रौ दिवा वारय भास्करम्।
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः।।६६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुद्धिमान् व्यक्ति रात को चन्द्र स्वर को कभी भी न प्रवाहित करें। इसी प्रकार दिन को सूर्य स्वर को भी न चलावें। इस प्रकार नित्य अभ्यास करते रहने से प्रत्येक व्यक्ति योगी बन जाता है॥६६॥

सूर्येण बध्यते सूर्यश्चन्द्रश्चन्द्रेण बध्यते।
यो जानाति क्रियामेतां त्रैलोक्यं वगशं क्षणात्॥६७॥

सूर्य स्वर से सूर्य और चन्द्र स्वर से चन्द्रमा वश में होते हैं। इस प्रकार स्वरों के प्रवाहों की क्रिया जानने वाले को सम्पूर्ण जगत् एक क्षण में वशीभूत हो जाता है॥६७॥

उदयं चन्द्रमार्गेण सूर्येणास्तमनं यदि।
तदा तैर्गुणसङ्घाता विपरीतं विवर्जयेत्॥६८॥

चन्द्रमा के स्वर से दिन का प्रारम्भ और सूर्य के स्वर से उसका अन्त यदि हो तो इस प्रकार के स्वरों के प्रवाह के द्वारा अनेक शुभ फल उत्पन्न होते हैं। यदि इसके विपरीत प्रवाह रहा तो उस समय कोई भी शुभ कार्य न करें॥६८॥

गुरुशुक्रबुधेन्दूनां वासरे वामनाडिका।
सिद्धिदा सर्वकार्येषु शुक्लपक्षे विशेषतः॥६९॥

बृहस्पति, शुक्र, बुध और सोमवार को यदि वाम नाड़ी या चन्द्र स्वर प्रवाहित हो तो सभी शुभ कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है। खास कर यदि शुक्ल पक्ष में उक्त वारों में बायीं नाड़ी चले तो विशेष सिद्धि प्राप्त होती है॥६९॥

अर्काङ्गारकसौरीणां वासरे दक्षनाडिका।
स्मर्त्तव्या चरकार्येषु कृष्णपक्षे विशेषतः॥७०॥

यदि दाहिनी नाड़ी (पिंगला) रवि, मंगल और शनिवार को चले और उसका स्मरण कर यदि चरकार्य (क्रूर आदि कार्य) किया जाय तो सिद्धि प्राप्त होती है। वह कार्य कृष्ण पक्ष में उक्त वारों में हो तो सिद्धि निश्चित ही प्राप्त होती है॥७०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथमं वहते वायुर्द्वितीये च तथाऽनलः।
तृतीयं वहते भूमिश्चतुर्थं वारुणी वहेत्।।७१।।

सबसे पहले नाड़ियों के प्रवाह में वायुतत्त्व बहता है। इसके बाद अग्नि तत्त्व। उसके अनन्तर भूमि तत्त्व और उसके बाद जल तत्त्व प्रवाहित होता है। सबके अन्त में आकाश तत्त्व भी प्रवाहित होता है।।७१।।

सार्धद्विघटिके पञ्च क्रमेणैवोपयान्ति च।
क्रमादेकैकनाड्यां च तत्त्वानां पृथगुद्भवः।।७२।।

पहले कहे हुए पाँचों तत्त्वों का क्रमशः उदय ढाई घड़ियों में होता है। एक-एक नाड़ी में भी पाँचों तत्त्वों का क्रम से पृथक् रूप से उदय होता है।।७२।।

अहोरात्रस्य मध्ये तु ज्ञेया द्वादश सङ्क्रमाः।
वृषकर्कटकन्यालिमृगमीना निशाकरे।।७३।।

दिवस और रात्रि में बारह संक्रान्तियाँ जानी जाती है। उनमें वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियाँ चन्द्र की मानी जाती हैं।।७३।।

मेषसिंहौ च कुम्भश्च तुला च मिथुनं धनम्।
उदये दक्षिणे ज्ञेयः शुभाऽशुभ-विनिर्णयः।।७४।।

मेष, सिंह, कुम्भ, तुला, मिथुन और धनु राशियाँ सूर्य की होती हैं। इसमें दक्षिण स्वर के उदय होने पर शुभ एवं अशुभ फल का निर्णय समझना चाहिये।।७४।।

तिष्ठेत्पूर्वोत्तरे चन्द्रो भानुः पश्चिम-दक्षिणे।
दशनाड्याः प्रसारे तु न गच्छेद्याम्यपश्चिमे।।७५।।

चन्द्रमा पूर्व और उत्तर दिशा में और सूर्य पश्चिम तथा दक्षिण दिशा में रहता है। इसलिये दाहिना स्वर अथवा दक्षिण नाड़ी चलने पर पश्चिम और दक्षिण दिशा की ओर यात्रा न करनी चाहिये।।७५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वामाचारप्रवाहे तु न गच्छेत् पूर्व-उत्तरे।
परिपन्थि भयं तस्य गतोऽसौ न निवर्त्तते।।७६।।

बायीं नाड़ी के प्रवाह के समय पूर्व और उत्तर दिशा की ओर यात्रा नहीं करनी चाहिये। यदि कोई यात्रा करता है, तो उसे शत्रु का भय होता है। शत्रु के भय से युक्त होने पर भी वह कभी लौटता नहीं है।।७६।।

तत्र तस्मान्न गन्तव्यं बुधैः सर्वहितैषिभिः।
तदा तत्र तु संयाते मृत्युरेव न संशयः।।७७।।

इसलिये सबके हितैषी विद्वानों ने उक्त प्रकर की यात्राएँ कभी नहीं करनी चाहिये ऐसा कहा है। अन्यथा वैसी यात्रा करने पर यात्री की मृत्यु होती है।।७७।।

शुक्लपक्षे द्वितीयायामार्के वहति चन्द्रमाः।
दृश्यते लाभदः पुंसां सौम्ये सौख्यं प्रजायते।।७८।।

शुक्लपक्ष की द्वितीया को सूर्यस्वर के समय चन्द्रस्वर यदि चलता हो, तो शुभकार्यों में सुख और लाभ की प्राप्ति होती हुई देखी जाती है।।७८।।

सूर्योदये यदा सूर्यश्चन्द्रश्चन्द्रोदये भवेत्।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि दिवारात्रिगन्तान्यपि।।७९।।

जिस दिन सूर्योदय के समय सूर्य स्वर और चन्द्रोदय के समय चन्द्रस्वर चलता हो, उस दिन-रात में किये गये कार्य सिद्ध होते हैं।।७९।।

चन्द्रकाले यदा सूर्यः सूर्यश्चन्द्रोदये भवेत्।
उद्वेगः कलहो हानिः शुभं सर्वं निवारयेत्।।८०।।

सूर्योदय के समय चन्द्रस्वर और चन्द्रोदय के समय सूर्यस्वर चलता हो, तो उस समय कलह, हानि अथवा दुःख आदि होते हैं। इस प्रकार शुभ कर्म न करना चाहिये।।८०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्यप्रवाहे प्रवदन्ति विज्ञां
ज्ञानं ह्यगम्यस्य तु निश्चयेन।
श्वासेन युक्तस्य तु शीतरश्मेः
प्रवाहकाले फलमन्यथा स्यात्।।८१।।

विद्वान् लोग कहते हैं कि, सूर्यस्वर के प्रवाह के समय सूक्ष्मतम एवं कठिन विषय का भी ज्ञान अवश्य ही प्राप्त होता है। इसके विपरीत चन्द्रस्वर के प्रवाह के समय उक्त विषयों का ज्ञान नहीं होता।।८१।।

विपरीत-स्वरफलम्

यदा प्रत्यूषकालेन विपरीतोदयो भवेत्।
चन्द्रस्थाने वहत्येको रविस्थाने च चन्द्रमा।।८२।।

प्रातःकाल की चार घड़ियों से लेकर दिनभर स्वरों का यदि विपरीत उदय होता हो अर्थात् चन्द्र स्वर के समय सूर्य स्वर और सूर्य स्वर के समय चन्द्र स्वर चलता हो तो फल उलटा होता है।।८२।।

प्रथमे मन उद्वेगं धनहानिर्द्वितीयके।
तृतीये गमनं प्रोक्तमिष्टनाशं चतुर्थके।।८३।।

प्रथम समय में (पहले चार घड़ियों में) स्वर विपरीत होने से मन उद्विग्न होता है। दूसरे समय में धन का नाश होता है। तीसरे समय में यात्रा एवं चौथी बार इष्ट द्रव्य का नाश होता है।।८३।।

पञ्चमे राज्यविध्वंसः षष्ठे सर्वार्थनाशनम्।
सप्तमे व्याधिदुःखानि अष्टमे मृत्युमादिशेत्।।८४।।

पाँचवें समय में राज्य का नाश और छठवें समय में सभी अर्थों का नाश होता है, सातवें समय में रोग एवं दुःख और आठवें समय में मृत्यु होती है। इस प्रकार स्वरों का विपरीत फल होता है।।८४।।

कालत्रये दिनान्यष्ट विपरीतं यदा वहेत्।
तदा दुष्टफलं प्रोक्तं किञ्चिन्न्यूनं तु शोभनम्।।८५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीनों समय आठ दिन तक यदि विपरीत स्वर प्रवाहित हो तो बुरा फल मिलता है। इस अवधि में यदि कुछ न्यूनता हो तो फल शुभ होता है।।८५।।

प्रातर्मध्याह्नयोश्चन्द्रः सायंकाले दिवाकरः।
तदा नित्यं जयो लाभो विपरीतं विवर्जयेत्।।८६।।

प्रात:काल और मध्याह्न में यदि चन्द्र स्वर चले और सायंकाल को सूर्य स्वर चले तो नित्य ही विजय प्राप्त होती है। यदि इसके विपरीत स्वर चले तो पराजय होती है। अत: विपरीत अवस्था में युद्ध आदि न करे।।८६।।

वामे वा दक्षिणे वापि यत्र सङ्क्रमते शिवः।
कृत्वा तत्पादमादौ च यात्रा भवति सिद्धिदा।।८७।।

बायाँ अथवा दाहिना स्वर जिस समय प्रवाहित हो और उसके साथ शिव स्वर (सुषुम्ना) भी यदि चलता हो, उस समय उस ओर का पाँव आगे रखकर प्रस्थान करना चाहिए। इससे सिद्धि प्राप्त होती है।।८७।।

चन्द्रः समपदः कार्यो रविस्तु विषमः सदा।
पूर्णं पादं पुरस्कृत्य यात्रा भवति सिद्धिदा।।८८।।

चन्द्र स्वर के प्रवाह के समय सम (बायाँ) पाँव आगे रखकर और सूर्य स्वर के प्रवाह के समय विषम पाँव (दाहिना) आगे रखकर यात्रा करने से सिद्धि प्राप्त होती है।।८८।।

यत्राङ्गे वहते वायुस्तदङ्ग-करसत्तलात्।
सुप्तोत्थितो मुखं स्पृष्ट्वा लभते वाञ्छितं फलम्।।८९।।

सोकर उठते समय जिस ओर का स्वर चलता हो, उसी ओर के हाथ से जो अपने मुख का स्पर्श करता है उसे इष्ट फल प्राप्त होता है।।८९।।

परदत्ते तथा ग्राहे गृहान्निर्गमनेऽपि च।
यदङ्गे वहते नाडी ग्राह्यं तेन कराङ्घ्रिणा।।९०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस ओर का स्वर चलता हो उसी ओर के हाथ से लेन-देन एवं उस ओर का पाँव आगे रखकर प्रस्थान करना उत्तम होता है॥९०॥

न हानिः कलहो नैव कण्टकैर्नापि भिद्यते।
निवर्त्तते सुखी चैव सर्वोपद्रववर्जितः॥९१॥

उक्त प्रकार के आचरण करने पर कलह, हानि, नाश आदि (शत्रुओं द्वारा) नहीं होते हैं। वह सभी कष्टों से मुक्त होकर सुख से अपने घर वापस आता है॥९१॥

गुरुबन्धुनृपामात्येष्वन्येषु शुभदायिनी।
पूर्णाङ्गे खलु कर्त्तव्या कार्यसिद्धिर्मनः स्थिता॥९२॥

गुरु, राजा, भाई, मन्त्री, शुभ फल देनेवाले लोगों में उसी ओर बैठकर अपना कार्य करें, जिस ओर का स्वर चल रहा हो। इस प्रकार कार्य से इच्छित कार्य की सिद्धि होती है॥९२॥

अग्निचौराधर्मधर्मा अन्येषां वादिनिग्रहः।
कर्त्तव्यं खलु रिक्तायां जयलाभसुखार्थिभिः॥९३॥

विजय, लाभ एवं सुख चाहने वालों को रिक्ता नामक नाड़ी के प्रवाह के समय आग लगाना, चोरी करना, धर्म और अधर्म का काम करना और प्रतिवादियों को हराना आदि कार्य करने चाहिये॥९३॥

दूरदेशे विधातव्ये गमनं तु हिमद्युतौ।
अभ्यर्णदेशे दीप्तं तु तरणाविति केचन॥९४॥

कुछ लोगों का मत है कि, दूर देशों की यात्रा चन्द्र स्वर में और समीप देशों की यात्रा सूर्य स्वर में करनी चाहिये॥९४॥

यत्किंचित्पूर्वमुद्दिष्टं लाभादि-समरागमः।
तत्सर्वं पूर्णनाडीषु जायते निर्विकल्पकम्॥९५॥

युद्ध, लाभ आदि के विषय में जो पहिले कहा गया है, वह पूर्ण नाड़ी के प्रवाह में निस्सन्देह सफल होता है॥९५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शून्यनाड्या विपर्यस्तं तत्पूर्वं प्रतिपादितम्।
जायते नान्यथा चैव यथा सर्वज्ञभाषितम्।।९६।।

शून्य नाड़ी के प्रवाह के समय पूर्वोक्त युद्ध, लाभ आदि निष्फल होते हैं। यह कथन सर्वज्ञ शिवजी का होने के कारण कभी असत्य नहीं हो सकता है।।९६।।

व्यवहारे खलोच्चाटे द्वेषिविद्यादिवञ्चके।
कुपितस्वामिचौराद्ये पूर्णस्थाः स्युर्भयङ्कराः।।९७।।

पूर्णस्वर के प्रवाह के समय व्यावहारिक कार्यों का करना, दुष्टों को दण्ड देना, द्वेष करना, विद्या देना, ठगना, स्वामी का क्रोध करना, चोरी करना आदि कार्य भयंकर फल देते हैं।।९७।।

दूरध्वनि शुभश्चन्द्रो निर्विघ्नोऽभीष्टसिद्धिदः।
प्रवेशकार्यहेतौ च सूर्यनाडी प्रशस्यते।।९८।।

चन्द्रस्वर दूर देश की यात्रा को निर्विघ्नरूप पूर्ण करने में और इष्ट वस्तु की प्राप्ति करा देने में शुभ होता है। गृहप्रवेश आदि कार्यों के लिये सूर्यस्वर शुभ कहा गया है।।९८।।

अयोग्ये योग्यता नाड्या योग्यस्थानेऽप्ययोग्यता।
कार्यानुबन्धनो जीवो यथा रुद्रस्तथाचरेत्।।९९।।

अयोग्य स्थान में नाड़ी की (स्वर की) योग्यता एवं योग्य स्थान में नाड़ी की अयोग्यता हो सकती है। क्योंकि यह प्राणी कार्य के बन्धन में मुक्त नहीं है। इसलिये रुद्रनाड़ी (सुषुम्ना) जैसी चले उसी प्रकार कार्य करना श्रेयस्कर है।।९९।।

चन्द्राचारे विषहते सूर्यो बलिवशं नयेत्।
सुषुम्नायां भवेन्मोक्ष एको देवस्त्रिधा स्थितः।।१००।।

चन्द्रस्वर विष हरण करता है और सूर्यस्वर बलवान् को भी वश करने वाला है। सुषुम्ना नाड़ी के प्रवाह में मोक्ष होता है। इस तरह एक देवता तीन रूपों में रहता है।।१००।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुभान्यशुभकार्याणि क्रियतेऽहर्निशं यदा।
तदा कार्यानुरोधेन कार्यं नाडी प्रचालनम्।।१०१।।

शुभ अथवा अशुभ जो भी कार्य दिन या रात में किया जांता है, उस कार्य के अनुकूल ही नाड़ी का चलना आवश्यक है। इस प्रकार कार्य के अनुकूल स्वर का प्रवाह सिद्धि देता है।।१०१।।

इडाफलम्

स्थिरकर्मण्यलङ्कारे दूराध्वगमने तथा।
आश्रमे धर्मप्रासादे वस्तूनां संग्रहेऽपि च।।१०२।।

इडा नाड़ी का फल—पूजन, तपस्या आदि स्थिर कार्य करने में, आभूषणों को धारण करने में, दूर देशों में जाने में, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ आदि चारों आश्रमों के धर्म को पालन करने में, घर में रहने में और वस्तुओं का संग्रह करने में इडानाड़ी का चलना उत्तम होता है।।१०२।।

वापी-कूप-तडागानां प्रतिष्ठा स्तम्भदेवयोः।
यात्रा दाने विवाहे च वस्त्रालङ्कारभूषणे।।१०३।।

सरोवर, कुआँ, तालाब आदि बनवाना, खम्भे का गाड़ना, देवता की प्रतिष्ठा करना, यात्रा, दान, विवाह, वस्त्र तथा अलंकार आदि धारण करना इडानाड़ी के प्रवाह के समय करना चाहिये।।१०३।।

शान्तिके पौष्टिके चैव दिव्यौषधि-रसायने।
स्व-स्वामिदर्शने मित्रे वाणिज्ये कणसङ्ग्रहे।।१०४।।

शान्तिजनक कार्य, पौष्टिक कर्म, दिव्य औषधि एवं रसायनों का निर्माण, मालिक का दर्शन, मैत्री-स्थपना, व्यापार, अन्नसंग्रह आदि कार्यों में इडानाड़ी शुभ होती है।।१०४।।

गृहप्रवेशे सेवायां कृषौ च बीजवापने।
शुभकर्मणि सन्धौ च निर्गमे च शुभः शशिः।।१०५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गृहप्रवेश, सेवा, खेती बोना, शुभ कार्य, सन्धि (मित्रता), प्रस्थान आदि में इडानाड़ी शुभ है॥१०५॥

विद्यारम्भादि-कार्येषु बान्धवानां च दर्शने।
जन्ममोक्षे च धर्मे च दीक्षायां मन्त्रसाधने।।१०६।।

विद्याध्ययन का प्रारम्भ, भाइयों का दर्शन, जन्म एवं मरण, धर्म का अनुष्ठान, दीक्षा का ग्रहण, मन्त्र-सिद्धि कार्यों में इडानाड़ी श्रेष्ठ है॥१०६॥

काल-विज्ञान-सूत्रे तु चतुष्पाद-गृहागमे।
कालव्याधिचिकित्सायां स्वामिसम्बोधने तथा।।१०७।।

काल का ज्ञान, यज्ञोपवीत को धारण करना और वेद का अध्ययन करना, पशुओं को घर में लाना, कठिन रोगों की चिकित्सा करना तथा मालिक को बुलाना आदि कार्य इडानाड़ी में शुभ होते हैं॥१०७॥

गजाश्वारोहणे धन्वि गजाश्वानां च बन्धने।
परोपकरणे चैव निधीनां स्थापने तथा।।१०८।।

हाथी-घोड़ों पर चढ़ना, धनुर्विद्या का अध्ययन, हाथी-घोड़ों को (घर में) बाँधना, दूसरों का उपकार करना, सम्पत्ति का संग्रह करना आदि कार्य इडानाड़ी में सफल होते हैं॥१०८॥

गीत-वाद्यादि-नृत्यादौ नृत्यशास्त्र-विचारणे।
पुरग्रामनिवेशे च तिलकक्षेत्रधारणे।।१०९।।

गायन करना, बाजा बजाना, नाचना, नाट्य-शास्त्र का विचार करना, गाँव और शहर में प्रवेश करना, तिलक लगाना, खेत खरीदना आदि के लिये इडानाड़ी शुभ है॥१०९॥

आर्तिशोकविषादे च ज्वरिते मूर्च्छितेऽपि वा।
स्वजनस्वामिसम्बन्धे अन्नादेर्दारुसङ्ग्रहे।।११०।।

दुःख, शोक, विषाद, ज्वर, मूर्छा आदि में, स्वजन तथा मालिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के सम्बन्ध में और अन्न, लकड़ी आदि के संग्रह करने में इडानाड़ी शुभ होती है॥११०॥

स्त्रीणां दन्तादि-भूषायां वृष्टेरागमने तथा।
गुरुपूजाविषादीनां चालने च वरानने॥१११॥

हे पार्वती! स्त्रियों के दन्त आभूषणों को लगाने में (मिस्सी आदि लगाने में), वृष्टि के आगमन में, गुरु के पूजन में एवं विष को उतारने में इडानाड़ी शुभ होती है॥१११॥

इडायां सिद्धिदं प्रोक्तं योगाभ्यासादि कर्म च।
तत्रापि वर्जयेद् वायुं तेज आकाशमेव च॥११२॥

योगाभ्यास आदि कार्य इडा नाड़ी में सिद्धि प्राप्त कराते हैं। किन्तु इडा नाड़ी में यदि तेज, वायु और आकाशतत्त्व उदित हों तो उक्त कार्य न करने चाहिये। (इडानाड़ी में पृथ्वी और जलतत्त्व उदित रहने पर ही उक्त कार्य सिद्ध होते हैं।)॥११२॥

सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति दिवारात्रिगतान्यपि।
सर्वेषु शुभकार्येषु चन्द्रचारः प्रशस्यते॥११३॥

दिन अथवा रात में किये गये सभी कार्य चन्द्रस्वर (इडानाड़ी) में सिद्ध होते हैं। सभी शुभ कार्यों में चन्द्रस्वर श्रेष्ठ होता है॥११३॥

पिंगलानाडीफलम्

कठिन-क्रूरविद्यानां पठने पाठने तथा।
स्त्रीसङ्गवेश्यागमने महानौकाधिरोहणे॥११४॥

पिंगला नाड़ी का फल–कठिन एवं क्रूर विद्याओं को पढ़ने और पढ़ाने में, स्त्री अथवा वेश्या के यहाँ जाने में और बड़ी नाव पर चढ़ने में पिंगला नाड़ी शुभ होती है॥११४॥

भ्रष्टकार्ये सुरापाने वीरमन्त्राद्युपासने।
विह्वलाद् ध्वंसदेशादौ विषदाने च वैरिणम्॥११५॥

खराब कार्य करने में, सुरा पीने में, अस्त्र-शस्त्रों के मंत्र सिद्ध करने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में, दुःख भोगने में, देशों को नष्ट करने में और शत्रु को विष देने में पिंगला नाड़ी श्रेष्ठ है॥११५॥

शास्त्राभ्यासे च गमने मृगया पशुविक्रये।
इष्टिका-काष्ठ-पाषाण-रत्नघर्षणदारुणे।।११६।।

शास्त्रों का अध्ययन, गमन, शिकार, पशुओं का विक्रय, ईंट, लकड़ी, पत्थर, रत्न आदि को घिसकर बनाना, बुरे कार्य करना आदि में पिंगला नाड़ी शुभ है॥११६॥

शस्त्राभ्यासे यन्त्रतन्त्रे दुर्गपर्वतरोहणे।
द्यूते चौर्ये गजाश्वादि रथसाधनवाहने।।११७।।

शस्त्रों के चलाने का अभ्यास करना, यन्त्र और तन्त्रों का व्यवहार करना, किलों और पहाड़ों पर चढ़ना, जुआ खेलना, चोरी करना, हाथी, घोड़ा, रथ आदि वाहनों पर चढ़ना आदि पिंगला नाड़ी में सफल होते हैं॥११७॥

व्यायामे मारणोच्चाटे षट्कर्मादि साधने।
यक्षिणी-यक्ष-वेताल-विभूतादिविनिग्रहे।।११८।।

व्यायम करने में, जारण-मारण-उच्चाटन, षट्कर्मों आदि की साधना में, यक्ष-यक्षिणी, बेलात, भूत, विष आदि के प्रभाव को नष्ट करने में पिंगला नाड़ी शुभ होती है॥११८॥

खरोष्ट्रमहिषादीनां गजाश्वारोहणे तथा।
नदी-जलौघ-तरणे भेषजे लिपिलेखने।।११९।।

गदहा, ऊँट, भैंसा, भैंस आदि रखने में, हाथी, घोड़ा पर चढ़ने में, नदी, तालाब आदि पार करने में, दवा लेने में और अक्षरों को लिखने में पिंगला नाड़ी श्रेष्ठ है॥११९॥

मारणे मोहने स्तम्भे विद्वेषोच्चाटने वशे।
प्रेरणे कर्षणे क्षोभे दाने च क्रय-विक्रये।।१२०।।

मारण, मोहन, स्तम्भन, शत्रुओं का उच्चाटन, वशीकरण, मन्त्रों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का प्रयोग, आकर्षण, क्षोभ, दान देना, खरीदना-बेचना आदि कार्य पिंगला में सफल होते हैं॥१२०॥

प्रेताकर्षण-विद्वेषे शत्रुनिग्रहणेऽपि च।
खड्गहस्ते वैरियुद्धे भोगे वा राजदर्शने।
भोज्ये स्नाने च व्यवहारे दीप्तकार्ये रविः शुभः॥१२१॥

प्रेतों को वश में करना, द्वेष करना, शत्रुओं को दण्ड देना, हाथ में तलवार लेना, शत्रुओं से युद्ध करना, उपभोग करना, राजा का दर्शन करना, भोजन, स्नान आदि कार्य और तेजस्वी कार्यों में पिंगला नाड़ी शुभ होती है॥१२१॥

भुक्तमार्गे च मन्दाग्नौ स्त्रीणां वैश्यादि कर्मणि।
शयनं सूर्यवाहेन कर्तव्यं सर्वदा बुधैः॥१२२॥

उपभोग करने में, मन्दाग्नि में, स्त्री गमन में, व्यापार कार्य में और सोने में सूर्यस्वर (पिंगला नाड़ी) श्रेष्ठ माने जाने के कारण पूर्वोक्त कार्य सूर्यस्वर में ही करने चाहिये॥१२२॥

क्रूराणि सर्वकर्माणि चराणि विविधानि च।
तानि सिद्ध्यन्ति सूर्येण नात्र कार्या विचारणा॥१२३॥

सभी प्रकार के क्रूर कार्य और विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े कार्य सूर्यस्वर में सिद्ध होते हैं। इसमें बिल्कुल शंका न करनी चाहिये॥१२३॥

सुषुम्नालक्षणम्

क्षणं वामे क्षणं दक्षे यदा वहति मारुतः।
सुषुम्ना सा च विज्ञेया सर्वकार्यहरा स्मृता॥१२४॥

सुषुम्ना नाड़ी का लक्षण—जब एक क्षण में बाँयीं और दूसरे ही क्षण में दाहिनी नाड़ी चलती है तो इस प्रकार क्षण-क्षण में परिवर्तनशील नाड़ी को सुषुम्ना कहते हैं। यह सभी कार्यों को नष्ट करती है॥१२४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तस्यां नाड्यां स्थिता वह्निर्ज्वलते कालरूपकः।
विषवत्तां विजानीयात्सर्वकार्यविनाशिनीम्।।१२५।।

उस सुषुम्ना नाड़ी में कालरूप प्रज्वलित अग्नि रहता है। इस नाड़ी को विष सदृश सब कार्यों को नष्ट करने वाली समझना चाहिए।।१२५।।

यदानुक्रममुल्लंघ्य यस्य नाडीद्वये वहेत्।
तदा तस्य विजानीयादशुभं नात्र संशयः।।१२६।।

जब स्वरों के प्रवाह के नियम का उल्लंघन कर नाड़ियों में वायु प्रवाहित होता है अर्थात् सूर्यस्वर के समय चन्द्रस्वर एवं चन्द्रस्वर के समय सूर्यस्वर चलता है तब उसका निःसन्देह अशुभ होता है।।१२६।।

क्षणं वामे क्षणं दक्षे विषमं भागमादिशेत्।
विपरीतं फलं ज्ञेयं ज्ञातव्यं च वरानने!।।१२७।।

हे पार्वतीजी! एक क्षण बाँयाँ और एक क्षण दाहिना स्वरा यदि प्रवाहित हो तो इसको विषम भाग कहा गया है। इसका फल विपरीत समझना चाहिये।।१२७।।

उभयोरेव सञ्चारं विषवत्तं विदुर्बुधाः।
न कुर्यात्क्रूरसौम्यानि तत्सर्वं विफलं भवेत्।।१२८।।

विद्वान् लोगों ने एक समय में दोनों स्वरों के प्रवाह को विष-तुल्य माना है। ऐसे समय में सौम्य और क्रूर दोनों प्रकार के कार्य सफल नहीं होते।।१२८।।

जीविते मरणे प्रश्ने लाभाऽलाभे जयाऽजये।
विषमे विपरीतं च संस्मरेज्जगदीश्वरम्।।१२९।।

जीवन और मृत्यु के विषय के प्रश्न, लाभ और अलाभ (हानि) जय और पराजय आदि विषयक कार्य स्वरों के विपरीत प्रवाह के समय में नहीं करना चाहिये। ऐसे समय में केवल ईश्वर का स्मरण करना उत्तम है।।१२९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईश्वरे चिन्तिते कार्यं योगाभ्यासादि कर्म च।

अन्यत्तत्र न कर्तव्यं जयलाभसुखैषिभिः।।१३०।।

विजय, लाभ और सुख चाहनेवाले लोगों को ईश्वर का चिन्तन, योगाभ्यास आदि कार्यों के अतिरिक्त कार्य न करना चाहिये।।१३०।।

सूर्येण वहमानायां सुषुम्नायां मुहुर्मुहुः।

शापं दद्याद्वरं दद्यात् सक्थैव च तदन्यथा।।१३१।।

सूर्यस्वर से मिली हुई सुषुम्ना नाड़ी यदि बारंबार प्रवाहित हो तो उस समय शाप या वर देना भी निष्फल होता है।।१३१।।

नाड़ीसंक्रमणे काले तत्त्वसंगमनेऽपि च।

शुभं किञ्चिन्न कर्त्तव्यं पुण्यदानानि कोटिधा।।१३२।।

नाड़ियों के प्रवाह बदलने के समय और तत्त्वों के भी परिवर्तन के समय पुण्यदायक दान आदि कार्यों के अतिरिक्त कोई भी शुभ कार्य न करना चाहिये।।१३२।।

विषमस्योदयो यत्र मनसाऽपि न चिन्तयेत्।

यात्रा हानिकरी तस्य मृत्युः क्लेशो न संशयः।।१३३।।

यदि कोई स्वर उलटा चलता हो तो उस समय कोई भी शुभ कार्य न करें। ऐसे समय में निःसन्देह यात्रा हानि कारक होती है और दुःख एवं मृत्यु भी उसे प्राप्त होती है।।१३३।।

पुरो वामोर्ध्वतश्चन्द्रो दक्षाधः पृष्ठतो रविः।

पूर्णरिक्तविवेकोऽयं ज्ञातव्यो दैशिकैः सदा।।१३४।।

चन्द्रस्वर का प्रवाह यदि आगे बाँयें और ऊपर की ओर हो तो उसे पूर्ण समझना चाहिये। इसके विपरीत यदि प्रवाह हो तो उसे शून्य समझे। इसी प्रकार सूर्यस्वर का प्रवाह पीछे, दाहिने और नीचे की ओर हो तो उसे पूर्ण और इसके विपरीत शून्य समझना चाहिये।।१३४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊर्ध्ववामाग्रतो दूतो ज्ञेयो वामपथि स्थितः।
पृष्ठे दक्षे तथाऽधस्तात्सूर्यवाहागतः शुभः।।१३५।।

चन्द्रस्वर के प्रवाह के समय यदि कोई दूत बायीं ओर, सामने अथवा ऊपर की ओर बैठे तो वह शुभ समझना चाहिये। इसी प्रकार सूर्यस्वर के प्रवाह के समय पीछे, दाहिने अथवा नीचे बैठा दूत शुभ होता है।।१३५।।

अनादिर्विषमः सन्धिः निराहारो निराकुलः।
परे सूक्ष्मे विलीयेत स सन्ध्या सद्भिरुच्यते।।१३६।।

पण्डित लोग अनादि, निराहार और निराकुल विषम सन्धि (सुषुम्ना नाड़ी की) जब सूक्ष्मतत्त्व में एकरूपता हो जाती है तो उसे सन्ध्या कहते हैं।।१३६।।

न वेदं वेद इत्याहुर्वेदो वेदो न विद्यते।
परात्मा विद्यते येन स वेदो वेद उच्यते।।१३७।।

इस स्वरोदय शास्त्र के अनुसार प्रसिद्ध वेदों को वेद नहीं माना गया है। क्योंकि वेद उसी को कहा जाता है जिसमें परमात्मारूप तत्त्व का प्रतिपादन किया गया हो।।१३७।।

न संध्या संधिरित्याहुः संध्या संधिर्निगद्यते।
विषमः संधिगः प्राणः सा सन्धिः संधिरुच्यते।।१३८।।

दिन-रात की सन्धि को वास्तव में सन्ध्या नहीं कहा जाता। अपितु विषमसन्धि में अर्थात् सुषुम्ना नाड़ी में रहने वाले प्राण को ही सन्धि कहा जाता है।।१३८।।

इति नाडीभेदः समाप्तः।

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवी उवाच

देव देव महादेव सर्वसंसारतारक।
स्थितं त्वदीयहृदये रहस्यं वद मे प्रभो।।१३९।।

पार्वतीजी ने कहा–हे देवाधिदेव शंकरजी! सम्पूर्ण संसार को तारनेवाले प्रभो! आप अपने हृदय में स्थित रहस्य को मुझसे कहिये।।१३९।।

शिव उवाच

स्वरज्ञानरहस्यात्तु न काचिच्चेष्टदेवता।
स्वरज्ञानरतो योगी स योगी परमो मतः।।१४०।।

शिवजी ने कहा–स्वरज्ञान से अतिरिक्त कोई भी इष्ट देवता नहीं है। इस स्वरज्ञान की साधना में निमग्न योगी ही श्रेष्ठ योगी है।।१४०।।

पञ्चतत्त्वाद्भवेत्सृष्टिस्तत्त्वे तत्त्वं प्रलीयते।
पञ्च तत्त्वं परं तत्त्वं तत्त्वातीतं निरञ्जनम्।।१४१।।

पाँच तत्त्वों से सृष्टि होती है और तत्त्वों में ही तत्त्वों का लय होता है। इसलिये पाँचों तत्त्व श्रेष्ठ हैं और इन तत्त्वों के अतिरिक्त केवल ईश्वर ही है।।१४१।।

तत्त्वानां नाम विज्ञेयं सिद्धियोगेन योगिनाम्।
भूतानां दुष्टचिह्नानि जानातीह स्वरोत्तमः।।१४२।।

योगियों को योगसिद्धि के द्वारा तत्त्वों के नाम जानने चाहिये। स्वरों को श्रेष्ठ जानकर प्राणियों के दुष्ट लक्षणों को जान सकता है।।१४२।।

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च।
पञ्चभूतात्मकं विश्वं यो जानाति स पूजितः।।१४३।।

पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व हैं। इन्हीं के द्वारा इस संसार का निर्माण हुआ है ऐसा जाननेवाला वन्दनीय है।।१४३।।

सर्वलोकस्य जीवानां न देहो भिन्नतत्त्वकः।
भूलोकात्सत्यपर्यन्तं नाडीभेदः पृथक् पृथक्।।१४४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सभी लोकों में रहने वालों के भी देहों में तत्त्व भिन्न-भिन्न नहीं हैं, किन्तु भूलोक से सत्यलोक तक के जीवों में नाड़ी-भेद पाया जाता है।।१४४।।

वामे वा दक्षिणो वापि उदयाः पञ्च कीर्तिता।
अष्टधा तत्त्वविज्ञानं शृणु वक्ष्यामि सुन्दरि!।।१४५।।

हे पार्वती! चन्द्र और सूर्यस्वर में पाँच तत्त्वों का उदय कहा गया है। अब आठ प्रकार का तत्त्व-विज्ञान मैं कहता हूँ, उसे सुनो।।१४५।।

प्रथमे तत्त्वसङ्ख्यानं द्वितीये श्वाससन्धयः।
तृतीये स्वरचिह्नानि चतुर्थे स्थानमेव च।।१४६।।

पहले तत्त्वों की संख्या, दूसरे में श्वांस की सन्धियाँ, तृतीय में स्वरों के चिह्न और चौथे प्रकार में स्वरों के स्थान कहे गये हैं।।१४६।।

पञ्चमे तस्य वर्णाश्च षष्ठे तु प्राण एव च।
सप्तमे स्वादसंयुक्ता अष्टमे गतिलक्षणम्।।१४७।।

पाँचवें भाग में स्वरों के रूप, छठें भाग में प्राण, सातवें में स्वाद और आठवें भाग में स्वरों की गति के लक्षण कहे गये हैं।।१४७।।

एवमष्टविधं प्राणं विषुवन्तं सचराचरम्।
स्वरात्परतरं देवि नान्यथा त्वम्बुजेक्षणे।।१४८।।

आठ प्रकार के प्राण आदि वायु इस समस्त संसार में वर्तमान हैं। हे कमलनयने! स्वरों से श्रेष्ठतर दूसरा कुछ भी नहीं है।।१४८।।

निरीक्षितव्यं यत्नेन सदा प्रत्यूषकालतः।
कालस्य वञ्चनार्थाय कर्म कुर्वन्ति योगिनः।।१४९।।

प्रयत्नपूर्वक सुबह से ही स्वरों के प्रवाह का निरीक्षण करना चाहिये। योगी लोग इसीलिये काल को ठगने के लिये योग-कार्य किया करते हैं।।१४९।।

श्रुत्योरङ्गुष्ठकौ मध्याङ्गुल्यौ नासापुटद्वये।
वदनप्रान्तके चान्याङ्गुलिर्दद्याच्च नेत्रयोः।।१५०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनों हाथों के अँगूठों को दोनों कानों में, दोनों बीच की अँगुलियों को नाक के छेदों में, मुख पर अनामिका और कनिष्ठिका अँगुलियों को और आँखों पर तर्जनी अँगुलियों को रखना चाहिये।।१५०।।

अस्यां तत्तु पृथिव्यादि तत्त्वज्ञानं भवेत्क्रमात्।
पीतश्वेतारुणश्यामैर्बिन्दुभिर्निरुपाधिकम्।।१५१।।

इस प्रकार कार्य करने से पृथ्वी, जल आदि पाँचों तत्त्वों का ज्ञान क्रम से होता है। उक्त प्रकार के कार्य को षण्मुखी मुद्रा भी कहते हैं। उपाधि रहित होकर पृथ्वी पीली, पानी श्वेत, अग्नि लाल, वायु कृष्णवर्ण के दिखाई देते हैं। आकाश का रूप सभी रङ्गों के मिश्रण जैसा विचित्र होता है।।१५१।।

दर्पणेन समालोक्य तत्र श्वासं विनिःक्षिपेत्।
आकारैस्तु विजानीयात्तत्त्वमेव विचक्षणः।।१५२।।

दर्पण में देखकर उस पर अपना श्वांस छोड़ना चाहिये और उस श्वांस के आकृति से बुद्धिमान् को तत्त्वों का भेद जानना चाहिये।।१५२।।

चतुरस्रं चार्धचन्द्रं त्रिकोणं वर्त्तुलं स्मृतम्।
बिन्दुभिस्तु नभो ज्ञेयमाकारैस्तत्त्वलक्षणम्।।१५३।।

चौकोने, अर्धचन्द्र की तरह के तिकोने और गोल आकृतियों को श्वास से क्रमशः पृथ्वी, जल, तेज और वायु का लक्षण समझना चाहिये।।१५३।।

मध्ये पृथ्वी ह्यधश्चापश्चोर्ध्वं वहति चानलः।
तिर्यग्वायुप्रवाहश्च नभो वहति सङ्क्रमः।।१५४।।

पृथ्वीतत्त्व से युक्त स्वर मध्य में, जलतत्त्व से युक्त स्वर नीचे की ओर, तेजतत्त्व मिश्रित स्वर ऊपर की ओर, वायुतत्त्व ये युक्त स्वर तिरछा और आकाशतत्त्व युक्त स्वर दो स्वरों के प्रवाहित होता है।।१५४।।

आपः श्वेताः क्षितिः पीता रक्तवर्णो हुताशनः।
मारुतो नीलजीमूत आकाशः सर्ववर्णकः।।१५५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथ्वी का रूप पीला, जल का श्वेत, तेजतत्त्व का लाल, वायुतत्त्व का मेघ की तरह नीला और आकाश का रूप सभी रूपों का मिश्रण (चित्ररूप) होता है॥१५५॥

स्थानपरत्वे तत्त्वज्ञानम्

स्कन्धद्वये स्थितो वह्निर्नाभिमूले प्रभञ्जनः।
जानुदेशे क्षितिस्तोयं पदान्ते मस्तके नभः॥१५६॥

तत्त्वों के स्थान–मनुष्य के शरीर में दोनों कन्धों में अग्नि तत्त्व रहता है। इसी प्रकार वायुतत्त्व नाभि के मूल में, पृथ्वीतत्त्व घुटनों में, जलतत्त्व पाँवों के अन्तिम भाग में और आकाश तत्त्व सिर में रहता है॥१५६॥

स्वाद से तत्त्वज्ञान प्रकार

माहेयं मधुरं स्वादं कषायं जलमेव च।
तीक्ष्णं तेजः समीरोऽम्ल आकाशं कटुकं तथा॥१५७॥

तत्त्वों के स्वाद–पृथ्वीतत्त्व का स्वाद मधुर, जलतत्त्व का कसैला, तेज का तीखा (तीता), वायु का खट्टा और आकाशतत्त्व का कडुवा होता है॥१५७॥

गति से तत्त्वज्ञान

अष्टाङ्गुलं वहेद्वायुरनलश्चतुरङ्गुलम्।
द्वादशाङ्गुलिमाहेयं वारुणं षोडशाङ्गुलम्॥१५८॥

तत्त्वों की गति–वायुतत्त्व का प्रवाह आठ अंगुल तक रहता है। इसी प्रकार अग्नितत्त्व का चार अंगुल तक, पृथ्वी तत्त्व का बारह अंगुल तक और जलतत्त्व का सोलह अंगुल तक प्रवाह होता है॥१५८॥

ऊर्ध्वं मृत्युरधः शान्तिस्तिर्यगुच्चाटनं तथा।
मध्ये स्तम्भं विजानीयान्नभः सर्वत्र मध्यमम्॥१५९॥

ऊपर की ओर अग्नितत्त्व का प्रवाह मृत्युजनक होता है। नीचे की ओर जलतत्त्व का प्रवाह शांतिदायक, वायु का तिरछा प्रवाह उच्चाटन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि कार्य के अनुकूल, पृथ्वी का मध्य का प्रवाह स्तम्भन कारक और आकाश तत्त्व का साधारण होता है।।१५९।।

पृथिव्यां स्थिरकर्माणि चरकर्माणि वारुणे।
तेजसि क्रूरकर्माणि मारणोच्चाटनेऽनिले।।१६०।।

पृथ्वीतत्त्व के उदयकाल में स्थिरकार्य, जल के उदय में चरकार्य, तेजतत्त्व के उदय में क्रूरकार्य और वायुतत्त्व में मारण, उच्चाटन आदि सिद्धिजनक होते हैं।।१६०।।

व्योम्नि किञ्चिन्न कर्त्तव्यमभ्यसेद्योगसेवनम्।
शून्यता सर्वकार्येषु नाऽत्र कार्या विचारणा।।१६१।।

आकाशतत्त्व के उदय में योगाभ्यास के अतिरिक्त कोई भी कार्य नहीं करना चाहिये। यदि इस तत्त्व के उदय काल में योगाभ्यास से भिन्न कार्य किये जाते हैं तो निःसन्देह सभी कार्यों में असफलता प्राप्त होती है।।१६१।।

पृथ्वीजलाभ्यां सिद्धिः स्यान्मृत्युर्वह्नौ क्षयोऽनिले।
नभसो निष्फलं सर्वं ज्ञातव्यं तत्त्ववादिभिः।।१६२।।

पृथ्वी एवं जलतत्त्व के उदय से सिद्धि, अग्नितत्त्व के उदय से मृत्यु, वायुतत्त्व के उदय से नाश और आकाशतत्त्व के उदय से निष्फलता प्राप्त होती है। ऐसा तत्त्ववादियों को जानना चाहिये।।१६२।।

चिरलाभः क्षितौ ज्ञेयस्तत्क्षणे तोयतत्त्वतः।
हानिः स्याद्वह्निवाताभ्यां नभसो निष्फलं भवेत्।।१६३।।

पृथ्वीतत्त्व के उदय में लाभ देरी से होता है। इसी प्रकार जलतत्त्व के उदय में शीघ्र लाभ, तेज और वायुतत्त्व में हानि और आकाशतत्त्व में असफलता प्राप्त होती है।।१६३।।

पीतः शनैर्मध्यवाही हनुर्यावद् गुरुध्वनि।
कवीष्णः पार्थिवी वायुः स्थिरकार्यप्रसाधकः।।१६४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस स्वर में पृथ्वीतत्त्व उदित रहता है उसका रंग पीला, उसकी गति मन्द, ठोढ़ी तक मध्यम, उसका शब्द गम्भीर, स्पर्श कुनकुना होता है। यह स्थिर कार्यों को सिद्ध करनेवाला होता है।।१६४।।

अधोवाही गुरुध्वानः शीघ्रगः शीतलस्थितः।
यः षोडशाङ्गुलो वायुः स आपः शुभकर्मकृत्।।१६५।।

जलतत्त्व वाला स्वर नीचे की ओर बहने वाला, गंभीर शब्दयुक्त, शीघ्र गति, ठंडा और सोलह अंगुल परिमाण वाला होता है और शुभ कार्यों को पूर्ण करता है।।१६५।।

आवर्त्तगश्चात्युष्णश्च शोणाभश्चतुरङ्गुलः।
ऊर्ध्ववाही च यः क्रूरकर्मकारी स तैजसः।।१६६।।

बहुत गरम, चक्र की भाँति बहनेवाला, लाल रंग का, चार अंगुल परिमाण वाला, ऊपर जानेवाला, तेजतत्त्व युक्त स्वर होता है इसमें क्रूर कार्य सिद्ध होते हैं।।१६६।।

उष्णः शीतः कृष्णवर्णस्तिर्यग्गाम्यष्टकाङ्गुलः।
वायुः पवनसंज्ञस्तु चरकर्मप्रसाधकः।।१६७।।

थोड़ा उष्ण और थोड़ा शीतल, काले वर्ण का, आठ अंगुल परिमाण वाला, तिरछी गतिवाला, वायुतत्त्व से युक्त स्वर होता है। इसमें चर कार्य सिद्ध होते हैं।।१६७।।

यः समीरः समरसः सर्वतत्त्वगुणावहः।
आम्बरं तं विजानीयाद्योगिनां योगदायकम्।।१६८।।

सभी तत्त्वों के गुणों से युक्त और समरस से युक्त आकाश तत्त्वयुक्त स्वर होता है। यह योगाभ्यास में योगियों को सिद्धि देने वाला है।।१६८।।

पीतवर्णं चतुष्कोणं मधुरं मध्यमाश्रितम्।
भोगदं पार्थिवं तत्त्वं प्रवाहे द्वादशाङ्गुलम्।।१६९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथ्वीतत्त्व पीले रंग का चौकोन, मधुर, मध्य में प्रवाहित होनेवाला, भोग देनेवाला और बारह अंगुल तक प्रवाह वाला होता है॥१६९॥

श्वेतमर्धेन्दु-सङ्काशं स्वादु-काषायमार्द्रकम्।
लाभकृद्वारुणं तत्त्वं प्रवाहे षोडशाङ्गुलम्॥१७०॥

जलतत्त्व सफेद रंग का, अर्धचन्द्र की तरह आकृति का, कसैला, भींगा हुआ, सोलह अंगुल परिमाण वाला और लाभदायक होता है॥१७०॥

रक्तं त्रिकोणं तीक्ष्णं च ऊर्ध्वभागे प्रवाहकम्।
दीप्तं च तैजसं तत्त्वं प्रवाहे चतुरङ्गुलम्॥१७१॥

तेजतत्त्व लाल रंग का, तिकोने आकृति वाला, तीक्ष्ण स्वादयुक्त, ऊपर प्रवाहित होने वाला, चमकीला और चार अंगुल परिमाण वाला होता है॥१७१॥

नीलं च वर्तुलाकारं स्वादाम्लं तिर्यगाश्रितम्।
चपलं मारुतं तत्त्वं प्रवाहेऽष्टाङ्गुलं स्मृतम्॥१७२॥

वायुतत्त्व नीले रङ्ग का, गोल आकृति का, खट्टे स्वाद वाला, तिरछी गतिवाला, चंचल और आठ अंगुल तक प्रवाह वाला होता है॥१७२॥

वर्णाकारे स्वादवाहे अव्यक्तं सर्वगामिनम्।
मोक्षदं नाभसं तत्त्वं सर्वकार्येषु निष्फलम्॥१७३॥

आकाशतत्त्व सभी लोगों को उसका रंग, आकार, स्वाद और गति अजेय होने के कारण जानने में सुलभ नहीं होता है। यह केवल मोक्ष देनेवाला होता है॥१७३॥

पृथ्वी जले शुभे तत्त्वे तेजो मिश्रफलोदयम्।
हानिमृत्युकरो पुंसामशुभौ व्योममारुतौ॥१७४॥

पृथ्वी और जल ये दोनों तत्त्व शुभ होते हैं। तेज तत्त्व मिश्रित (शुभ-अशुभ दोनों) फल देता है। वायु और आकाश तत्त्व पुरुषों की हानि और मृत्यु कारक है॥१७४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपूर्वपश्चिमे पृथ्वी तेजश्च दक्षिणे तथा।
वायुश्चोत्तरदिग्ज्ञेयो मध्ये कोणगतं नभः।।१७५।।

पृथ्वीतत्त्व पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा तक, दक्षिण दिशा में तेजतत्त्व, उत्तर में वायुतत्त्व और दिशाओं के मध्य कोण में आकाशतत्त्व रहता है।।१७५।।

चन्द्रे पृथ्वीजले स्यातां सूर्येऽग्निर्वा यदा भवेत्।
तदा सिद्धिर्न सन्देहः सौम्याऽसौम्येषु कर्मसु।।१७६।।

चन्द्रस्वर में पृथ्वी या जलतत्त्व के उदित रहने पर निःसन्देह शुभ कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है। सूर्य स्वर में अग्नितत्त्व उदित होने पर क्रूर कार्यों में निश्चित सिद्धि मिलती है।।१७६।।

लाभः पृथ्वीकृतोऽह्नि स्यान्निशायां लाभकृज्जलम्।
वह्नौ मृत्युः क्षयो वायुर्नभः स्थानं दहेत्क्वचित्।।१७७।।

दिन में पृथ्वीतत्त्व का उदय होने पर लाभ होता है। जलतत्त्व का उदय रात में लाभ कराता है। अग्नितत्त्व के उदय में मृत्यु, वायुतत्त्व के उदय में नाश और आकाशतत्त्व के उदय में स्थान का दाह होता है।।१७७।।

जीवितव्ये जये लाभे कृष्यां च धनकर्मणि।
मन्त्रार्थे युद्धप्रश्ने च गमनागमने तथा।।१७८।।

जीवन के लिए जय, लाभ, खेती, धन संग्रह, मन्त्रार्थ ज्ञान, युद्ध विषयक प्रश्न, गमन-आगमन आदि कार्यों में पृथ्वीतत्त्व शुभ माना जाता है।।१७८।।

आयाति वारुणे तत्त्वे शत्रुरस्ति शुभं क्षितौ।
प्रयाति वायुतोऽन्यत्र हानिमृत्युनभोऽनलः।।१७९।।

पृथ्वीतत्त्व में 'शत्रु स्थिर है', जलतत्त्व में 'शत्रु आ रहा है' वायुतत्त्व में 'शत्रु कहीं दूसरी ओर जाता है' और अग्नितत्त्व में 'शत्रु नाश करने और मारने के लिये आता है' ऐसा समझना चाहिए।।१७९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथिव्यां मूलचिन्ता स्याज्जीवस्य जलवातयोः।
तेजसा धातुचिन्ता स्याच्छून्यमाकाशतो वदेत्।।१८०।।

प्रश्न करते समय यदि पृथ्वीतत्त्व का उदय हो तो प्रश्नकर्ता को मूल चिन्ता है ऐसा समझे। यदि उस समय जल या वायुतत्त्व उदित हो तो प्रश्नकर्ता को प्राणी विषयक चिन्ता होती है। तेजतत्त्व उदित हो तो धातु चिन्ता और आकाशतत्त्व उदित होने पर कोई चिन्ता नहीं है, ऐसा समझना चाहिए।।१८०।।

पृथिव्यां बहुपादाः स्युर्द्विपदस्तोयवायुतः।
तेजस्येव चतुष्पादो नभसा पादवर्जितः।।१८१।।

यदि प्रश्न के समय पृथ्वीतत्त्व का उदय हो तो प्रश्नकर्ता को दो से अधिक पाँववाले जीवों की चिन्ता रहती है। जल या वायुतत्त्व का उदय होने पर मनुष्य की चिन्ता, तेजतत्त्व के उदित रहने पर पशुओं की चिन्ता और आकाशतत्त्व उदित रहने पर बिना पाँव वाले जीवों की चिन्ता होती है।।१८१।।

कुजो वह्नी रविः पृथ्वी सौरिरापः प्रकीर्तितः।
वायुस्थानस्थितो राहुर्दक्षरंध्रप्रवाहकः।।१८२।।

सूर्यस्वर में (दक्षिण पिंगला नाड़ी में) अग्नि, पृथ्वी, जल और वायु तत्त्व में क्रमशः मंगल, सूर्य, शनि और राहु रहते हैं।।१८२।।

जलं चन्द्रो बुधः पृथ्वी गुरुर्वातः सितोऽनलः।
वामनाड्यां स्थिताः सर्वे सर्वकार्येषु निश्चिताः।।१८३।।

चन्द्रस्वर में उदित जल, पृथ्वी, वायु और अग्नितत्त्वों में क्रमशः चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र रहते हैं। उक्त नवों ग्रह सब कार्यों में सिद्धिदायक हैं।।१८३।।

पृथ्वी बुधो जलविन्दुः शुक्रो वह्नी रविः कुजः।
वायू राहुशनी व्योम गुरुदेवः प्रकीर्त्तितः।।१८४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथ्वीतत्त्व से बुध, जलतत्त्व से चन्द्र, अग्नितत्त्व से रवि और मंगल, वायुतत्त्व से शनि और राहु तथा आकाशतत्त्व से गुरु कहे गये हैं।।१८४।।

प्रवासप्रश्न आदित्ये यदि राहुर्गतोऽनिले।
तदाऽसौ चलितो ज्ञेयः स्थानान्तरमपेक्षते।।१८५।।

यात्रा विषयक प्रश्न पूछे जाने के समय यदि सूर्यस्वर में के वायुतत्त्व में राहु हो तो यात्री एक स्थान से दूसरे स्थान को जा रहा है और दूसरे स्थान को जाना चाहता है, ऐसा समझना चाहिए।।१८५।।

आयाति वारुणे तत्त्वे तत्रैवास्ति शुभं क्षितौ।
प्रवासी पवनेऽन्यत्र मृत्युरेवानले भवेत्।।१८६।।

यदि जलतत्त्व उदित हो तो यात्री आ रहा है, ऐसा समझे, पृथ्वीतत्त्व में यात्री वहीं है ऐसा समझना चाहिये। वायु तत्त्व के उदय में प्रवासी दूसरी जगह है ऐसा समझे और प्रश्न के समय अग्नितत्त्व हो तो प्रवासी की मृत्यु हुई, ऐसा समझना चाहिये।।१८६।।

पार्थिवे मूलविज्ञानं शुभं कार्यं जले तथा।
आग्नेये धातुविज्ञानं व्योम्नि शून्यं विनिर्दिशेत्।।१८७।।

प्रश्न के समय यदि पृथ्वीतत्त्व उदित हो तो प्रश्नकर्ता का वृक्ष आदि विषयक अभिप्राय होता है। इसी प्रकार जलतत्त्व के उदय में प्रश्नकर्ता शुभ कार्यों के बारे में जानना चाहता है। अग्नितत्त्व में धातुओं के बारे में और आकाश तत्त्व के उदय में कुछ भी नहीं जानना चाहता है, ऐसा समझना चाहिये।।१८७।।

तुष्टिः पुष्टी रतिः क्रीडा जयहर्षो धराजले।
तेजोवाय्वोश्च सुप्ताक्षो ज्वरकम्पः प्रवासिनः।।१८८।।

पृथ्वी और जलतत्त्व के उदय के समय प्रवासी के विषय में यदि प्रश्न किया जाता है, तो यह समझना चाहिये कि, प्रवासी सन्तुष्ट, पुष्ट,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय के आनन्द से युक्त, खेलों में आसक्त, विजय या हर्षयुक्त है। तेज या वायुतत्त्व में आलसी, ज्वर से युक्त अथवा दुःखित समझें॥१८८॥

गतायुर्मृत्युराकाशे तत्त्वस्थाने प्रकीर्तिताः।
द्वादशैताः प्रयत्नेन ज्ञातव्या दैशिकैः सदा॥१८९॥

आकाशतत्त्व के उदय के समय यदि प्रश्न हुआ हो तो प्रवासी की आयु समाप्त हुई है ऐसा समझे। उक्त प्रकार के बारहों प्रश्नों के उत्तर, जो तत्त्वों के स्थानों के वर्णन प्रसंग में कहे गये हैं, ज्योतिषियों को प्रयत्नपूर्वक समझने चाहिये॥१८९॥

पूर्वस्यां पश्चिमे याम्ये उत्तरस्यां यथाक्रमम्।
पृथिव्यानि च भूतानि बलिष्ठानि विनिर्दिशेत्॥१९०॥

पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशाओं में क्रमशः पृथ्वी, जल, तेज और वायुतत्त्व प्रबल होते हैं॥१९०॥

शरीर उत्पत्ति

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च।
पञ्चभूतात्मको देहो ज्ञातव्यश्च वरानने॥१९१॥

हे पार्वती! यह शरीर पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पंचतत्त्वों से (महाभूतों से) बना हुआ है॥१९१॥

अस्थि मांसं त्वचा नाडी रोमं चैव तु पञ्चमम्।
पृथ्वी पञ्चगुणा प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम्॥१९२॥

हड्डी, मांस, खाल, नाड़ियाँ और रोम ये पृथ्वी के पाँच गुणों, के प्रतीक हैं। इस बात को वेदान्त भी प्रतिपादन करता है॥१९२॥

शुक्रशोणितमज्जाश्च मूत्रं लालं च पञ्चमम्।
आपः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम्॥१९३॥

जलतत्त्व के वीर्य, रक्त, मज्जा, मूत्र और लार ये पाँच गुण हैं॥१९३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षुधा तृषा तथा निद्रा क्रान्तिरालस्यमेव च।
तेजः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम्।।१९४।।

तेजतत्त्व के भूख, प्यास, नींद, क्रान्ति और आलस्य ये पाँच गुण हैं।।१९४।।

धावनं चलनं ग्रन्थः सङ्कोचनप्रसारणे।
वायोः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम्।।१९५।।

वायुतत्त्व के दौड़ना, चलना, ग्रन्थियुक्त होना, सिकुड़ना और फैलना ये पाँच गुण हैं।।१९५।।

रागद्वेषौ तथा लज्जा भयं मोहश्च पञ्चमः।
नभसः पञ्चगुणाः प्रोक्ता ब्रह्मज्ञानेन भाषितम्।।१९६।।

आकाश के प्रेम, द्वेष, लज्जा, भय और मोह ये पाँच गुण हैं।।१९६।।

पृथ्व्याः पलानि पञ्चाशच्चत्वारिंशति तथाम्भसः।
अग्नेस्त्रिंशत्पुनर्वायोर्विंशतिर्नभसो दश।।१९७।।

देह में पाँचों तत्त्वों का प्रमाण निम्नलिखित रूप से होता है। पृथ्वी का पचास पल, जल का चालिस पल, तेज का तीस पल, वायु का बीस पल और आकाश का दश पल।।१९७।।

पृथिव्यां चिरकालेन लाभश्चापः क्षणाद्भवेत्।
जायते पवने स्वल्पः सिद्धोऽप्यग्नौ विनश्यति।।१९८।।

स्वर में पृथ्वीतत्त्व के उदय में लाभ शीघ्र नहीं होता है। जलतत्त्व में तत्क्षण लाभ होता है। वायुतत्त्व में थोड़ा लाभ होता है। और अग्नितत्त्व में प्राप्त हुआ लाभ भी नष्ट हो जाता है।।१९८।।

पृथ्व्याः पञ्च ह्यपां वेदा त्रयस्तेजो द्विवायुतः।
नभस्येकगुणश्चैव तत्त्वज्ञानमिदं भवेत्।।१९९।।

पृथ्वी में पाँच, जल में चार, तेज में तीन, वायु में दो और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकाश में एक गुण होता है। इस तत्त्व को प्रत्येक को समझना चाहिये॥१९९॥

फूत्कारकृत्प्रस्फुटिता विजीर्णा पतिता धरा।
ददाति सर्वकार्येषु अवस्थासदृशं फलम्॥२००॥

फटी हुई, फूत्कार करने वाली, जीर्ण और गिरि हुई पृथ्वी अवस्था के अनुरूप फल सभी कार्यों में देती है॥२००॥

धनिष्ठा रोहिणी ज्येष्ठानुराधा श्रवणं तथा।
अभिजिदुत्तराषाढा पृथ्वीतत्त्वमुदाहृतम्॥२०१॥

पृथ्वीतत्त्व के धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण, अभिजित् और उत्तराषाढ़ा ये सात नक्षत्र हैं॥२०१॥

पूर्वाषाढा तथाऽऽश्लेषा मूलमार्द्रा च रेवती।
उत्तराभाद्रपदा तोयतत्त्वं शतभिषक् प्रिये॥२०२॥

हे पार्वति! जलतत्त्व के पूर्वाषाढ़ा, आश्लेषा, मूल, आर्द्रा, रेवती, उत्तराभाद्रपदा और शतभिषा ये सात नक्षत्र हैं॥२०२॥

भरणी कृत्तिका पुष्यो मघा पूर्वा च फाल्गुनी।
पूर्वाभाद्रपदा स्वाती तेजस्तत्त्वमिति प्रिये॥२०३॥

हे प्रिये! तेजतत्त्व के भरणी, कृत्तिका, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा और स्वाती ये सात नक्षत्र हैं॥२०३॥

विशाखोत्तरफाल्गुन्यौ हस्तचित्रे पुनर्वसु।
अश्विनीमृगशीर्षे च वायुतत्त्वमुदाहृतम्॥२०४॥

वायुतत्त्व के विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनी और मृगशिरा ये सात नक्षत्र हैं॥२०४॥

वहन्नाडीस्थितो दूतो यत्पृच्छति शुभाऽशुभम्।
तत्सर्वं सिद्धमाप्नोति शून्यं शून्यं च संशयः॥२०५॥

प्रवाहित नाड़ी की ओर बैठकर दूत शुभ वा अशुभ कार्यों को यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूछता है तो वे सभी कार्य सिद्ध होते हैं। इसके विपरीत बैठने से कार्य सिद्ध नहीं होते, इसमें सन्देह नहीं॥२०५॥

पूर्णोऽपि निर्गम-श्वासे सुतत्त्वेऽपि न सिद्धिदः।
सूर्यश्चन्द्रोऽथवा नृणां सङ्ग्रहः सर्वसिद्धिदः॥२०६॥

यदि पूर्णरूप से सूर्यस्वर प्रवाहित हो और उसमें शुभतत्त्व भी उदित हो, फिर भी उसमें पूछे हुए कार्य कदापि सिद्ध नहीं होते हैं। इसके विपरीत चन्द्रस्वर में पूछे गये कार्य अवश्य सिद्ध होते हैं॥२०६॥

तत्त्वे रामो जयः प्राप्तः सुतत्त्वे च धनञ्जयः।
कौरवा निहताः सर्वे युद्धे तत्त्वविपर्ययात्॥२०७॥

तत्त्वों की प्रबलता के कारण ही रामचन्द्रजी की विजय हुई इसी प्रकार शुभतत्त्वों के द्वारा ही अर्जुन ने युद्ध में सफलता प्राप्त की और तत्त्वों के अशुभ रहने के कारण कौरवों की हार हुई और वे मारे गये॥२०७॥

जन्मान्तरीयसंस्कारात्प्रसादादथवा गुरोः।
केषाञ्चिज्जायते तत्त्ववासना विमलात्मनाम्॥२०८॥

गुरु के प्रसाद से या पहले जन्म के संस्कार के कारण कुछ ही पवित्र हृदयवालों को तत्त्वों के विषय में जानने की इच्छा होती है॥२०८॥

लं बीजं धरणीं ध्यायेच्चतुरस्रां सुपीतभाम्।
सुगन्धां स्वर्णवर्णाभां प्राप्नुयाद् देहलाघवम्॥२०९॥

लं बीज से सोने के समान पीले, चौकोन और सुगन्धयुक्त पृथ्वीतत्त्व का ध्यान करने से शरीर को लघुता (हलकापन) प्राप्त होता है॥२०९॥

वं बीजं वारुणे ध्यायेत्तत्त्वमर्धशशिप्रभम्।
क्षुत्तृष्णादिसहिष्णुत्वं जलमध्ये च मज्जनम्॥२१०॥

'वं' बीज से अर्ध चन्द्रमा की तरह प्रभा एवं आकृतिवाले जलतत्त्व का ध्यान करनेवाले को भूख-प्यास आदि को सहन करने की और जल के भीतर रहने की शक्ति प्राप्त होती है॥२१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रं बीजमग्निं ध्यायेत्त्रिकोणमरुणप्रभम्।
बह्वन्नपानभोक्तृत्वमातपाग्निसहिष्णुता।।२११।।

'रं' बीज से तिकोन आकृति के, लाल रंग के, तेजतत्त्व के ध्यान से बहुत अन्न खाने की, जल पीने की तथा घाम और आग सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है।।२११।।

यं बीजं पावनं ध्यायेद्वर्तुलं श्यामलप्रभम्।
आकाशगमनाद्यं च पक्षिवद्गमनं तथा।।२१२।।

'यं' बीज से गोल आकृति के काले रङ्ग के वायुतत्त्व के ध्यान से आकाश में भ्रमण करने की और पक्षियों की तरह उड़ने की शक्ति प्राप्त होती है।।२१२।।

हं बीजं गगनं ध्यायेन्निराकारं बहुप्रभम्।
ज्ञानं त्रिकालविषयमैश्वर्यमणिमादिकम्।।२१३।।

'हं' बीज से अत्यन्त उज्ज्वल, निराकार, आकाशतत्त्व के ध्यान से त्रिकाल का ज्ञान होता है और अणिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होती है।।२१३।।

स्वरज्ञानी नरो यत्र धनं नास्ति ततः परम्।
गम्यते स्वरज्ञानेन अनायासं फलं भवेत्।।२१४।।

जहाँ पर स्वर ज्ञानी पुरुष हैं, वहाँ उससे अधिक श्रेष्ठ धन दूसरा कुछ भी नहीं है। क्योंकि, स्वर के ज्ञान से अनायास ही सम्पूर्ण फल प्राप्त होते हैं।।२१४।।

देवी उवाच

देवदेव महादेव महाज्ञानं स्वरोदयम्।
त्रिकालविषयं चैव कथं भवति शङ्कर।।२१५।।

पार्वतीजी ने कहा—हे देवों के देव शंकरजी! स्वरज्ञान से भूत, भविष्य, वर्तमान इन तीनों कालों का ज्ञान कैसे होता है, यह मुझको कहिये।।२१५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिव उवाच

अर्थकालजयप्रश्नं शुभाऽशुभमिति त्रिधा।

एतत्त्रिकालविज्ञानं नाऽन्यद्भवति सुन्दरि।।२१६।।

शिवजी ने कहा–हे सुन्दरि! स्वरज्ञान के बिना अर्थ, काल, जय आदि शुभ, अशुभ कार्यों का और तीनों कालों का ज्ञान नहीं होता है।।२१६।।

तत्त्वे शुभाऽशुभं कार्यं तत्त्वे जय-पराजयौ।

तत्त्वे सुभिक्षदुर्भिक्षं तत्त्वं त्रिपदमुच्यते।।२१७।।

तत्त्वों में ही शुभ और अशुभ कार्य, जय, पराजय, सुभिक्ष और दुर्भिक्ष होते हैं। इसलिये तत्त्वों को त्रिकाल का आधार माना जाता है।।२१७।।

देवी उवाच

देवदेव महादेव सर्वसंसारसागरे।

किं नराणां परं मित्रं सर्वकार्यार्थसाधकम्।।२१८।।

पार्वतीजी ने कहा–हे देवों के देव अधिदेव शंकरजी! इस सम्पूर्ण संसार-सागर में सब कार्यों को सिद्ध करनेवाला श्रेष्ठ मित्र मनुष्यों का कौन है?।।२१८।।

शिव उवाच

प्राण एव परं मित्रं प्राण एव परं सखा।

प्राणतुल्यः परो बन्धुर्नास्ति नास्ति वरानने।।२१९।।

शंकरजी ने कहा–हे सुमुखि! प्राण ही परम मित्र है। प्राण परम सखा है, प्राण के सदृश श्रेष्ठ बन्धु कोई नहीं है।।२१९।।

देवी उवाच

कथं प्राणे स्थितो वायुर्देहः किं प्राणरूपकः।

तत्त्वेषु सञ्चरन्प्राणो ज्ञायते योगिभिः कथम्।।२२०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पार्वतीजी ने पूछा–वायु प्राणों में कैसे रहता है? प्राण रूप ही देह क्यों है? तत्त्वों में संचार करनेवाले प्राण को योगी कैसे जानते हैं।।२२०।।

शिव उवाच

कायानगरमध्यस्थो मारुतो रक्षपालकः।
प्रवेशे दशभिः प्रोक्तो निर्गमे द्वादशाङ्गुलः।।२२१।।

शिवजी ने कहा–देहरूप नगर में रक्षक वायु है। श्वांस लेते समय उसका परिमाण दश अंगुल और छोड़ते समय बारह अंगुल का होता है।।२२१।।

गमने तु चतुर्विंशन्नेत्रवेदास्तु धावने।
मैथुने पञ्चषष्टिश्च शयने च शताङ्गुलम्।।२२२।।

उस वायु का परिमाण चलते समय चौबीस, दौड़ते समय बयालिस, स्त्री प्रसंग में पैंसठ और सोते समय सौ अंगुल का होता है।।२२२।।

प्राणस्य तु गतिर्देवि स्वभावाद् द्वादशाङ्गुलम्।
भोजने वमने चैव गतिरष्टादशाङ्गुलम्।।२२३।।

हे देवि! स्वाभाविक प्राण की गति या परिमाण बारह अंगुल और भोजन या वमन के समय अठारह अंगुल का होता है।।२२३।।

एकाङ्गुलं कृते न्यून प्राणे निष्कामता मता।
आनन्दस्तु द्वितीये स्यात्कामशक्तिस्तृतीयके।।२२४।।

स्वाभाविक वायु की गति को यदि एक अंगुल योगाभ्यास से कम किया जाता है तो उससे निष्कामता, दो अंगुल कम करें तो आनन्द और तीन अंगुल कम करें तो काम शक्ति प्राप्त होती है।।२२४।।

वाचासिद्धिश्चतुर्थे च दूरदृष्टिस्तु पञ्चमे।
षष्ठे त्वाकाशगमनं चण्डवेगश्च सप्तमे।।२२५।।

चार अंगुल कम करें तो वाक्सिद्धि, पाँच अंगुल की कमी से दूरदर्शिता, छः अंगुल कम करने से आकाश में जाने की शक्ति और सात अंगुल की कमी से प्रबल वेग प्राप्त होता है।।२२५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टमे सिद्धयश्चैव नवमे निधयो नव।

दशमे दश मूर्तीश्च छाया नैकादशे भवेत्।।२२६।।

यदि आठ अंगुल कम करें तो अष्टसिद्धि, नौ अंगुल की कमी से नौ निधियाँ, दस अंगुल कम करें तो दस मूर्तियाँ और ग्यारह अंगुल की कमी से छाया-राहित्य प्राप्त होता है॥२२६॥

द्वादशे हंसचारश्च गङ्गामृतरसं पिबेत्।

आनखाग्रप्राणपूर्णे कस्य भक्ष्यं न भोजनम्।।२२७।।

बारह अंगुल कम करने (पूर्णरूप से वायु निरोधन) से हंसगति प्राप्त होकर वह गंगामृत का पान करता है। नखों के अग्रभाग तक प्राण को शरीर में भरने से उसे खाने-पीने की आवश्यकता नहीं होती है॥२२७॥

एवं प्राणविधिः प्रोक्तः सर्वकार्यफलप्रदः।

जायते गुरुवाक्येन न विद्याशास्त्रकोटिभिः।।२२८।।

सब कार्यों को सिद्ध करनेवाला यह प्राणविधि कहा गया है। यह गुरुवाक्य से ही ज्ञान होता है। शास्त्र और विद्या का कोटिक्रम इसमें आवश्यक नहीं होता है॥२२८॥

प्रातश्चन्द्राः रविः सायं यदि देवान्न लभ्यते।

मध्याह्नान्मध्यरात्राच्च परतस्तु प्रवर्तते।।२२९।।

सुबह चन्द्रनाड़ी और शाम को सूर्यनाड़ी यदि भाग्यवश प्राप्त नहीं हों तो ये दोपहर अथवा आधी रात को अवश्य मिलता है॥२२९॥

दूरयुद्धे जयी चन्द्रः समासन्ने दिवाकरः।

वहन्नाड्यगतः पादः सर्वसिद्धिः प्रदायकः।।२३०।।

चन्द्रस्वर दूर देश के युद्ध में और सूर्यस्वर निकट युद्ध में विजय प्राप्त कराता है। जिस ओर का स्वर चलता हो उसी ओर का पाँव आगे रखकर की हुई यात्रा सिद्धि दायक होती है॥२३०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यात्रारम्भे विवाहे च प्रवेशे नगरादिके।
शुभकार्याणि सिद्ध्यन्ति चन्द्रचारेषु सर्वदा।।२३१।।

चन्द्रस्वर यात्रारम्भ, विवाह, नगर-प्रवेश आदि में शुभ सिद्धि देता है।।२३१।।

अयनतिथिदिनेशैः स्वीयतत्त्वे च युक्ते,
यदि वहति कदाचिद् दैवयोगेन पुंसाम्।
स जयति रिपुसैन्यं स्तम्भमात्रस्वरेण,
प्रभवति न च विघ्नं केशवस्यापि लोके।।२३२।।

भाग्य से यदि पुरुषों के स्वर में अयन, तिथि, वार आदि के स्वामी उदित हों तो उनके स्वर के स्तम्भन से ही शत्रु सैन्य जीत जाता है और उनको वैकुण्ठ में भी विघ्न नहीं सताते हैं।।२३२।।

जीवं रक्ष जीवं रक्ष जीवाङ्के परिधाय च।
जीवो याति यो युद्धे जीवं जयति मेदिनीम्।।२३३।।

जो स्वर चलता हो उस ओर वस्त्र पहनकर "जीवं रक्ष" यह मन्त्र जो जपता है वह सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतता है।।२३३।।

भूमौ जले च कर्त्तव्यं गमनं शान्तिकर्मसु।
वह्नौ वायौ प्रदीप्तेसु खे पुनर्नोभयेष्वपि।।२३४।।

पृथ्वी या जलतत्त्व में शुभकार्यों के निमित्त यात्रा करें। तेज या वायुतत्त्व में क्रूर कार्यों के लिये यात्रा करें। आकाशतत्त्व में किसी प्रकार के कार्यों के लिये यात्रा न करें।।२३४।।

जीवेन शस्त्रं बध्नीयात् जीवे नैव विकाशयेत्।
जीवेन प्रक्षिपेच्छस्त्रं युद्धे जयति सर्वदा।।२३५।।

जिस ओर का स्वर प्रवाहित हो, उसी ओर शस्त्र धारण कर उसी ओर के हाथ से शस्त्र को पकड़कर चलने से युद्ध में विजय होती है।।२३५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकृष्य प्राणपवनं समारोहेत वाहनम्।
समुत्तरे पदं दद्यात्सर्वकार्याणि साधयेत्।।२३६।।

प्राण को खींचकर दाहिना पाँव आगे रखकर अश्वादि वाहन पर चढ़ने से मनुष्य की इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।।२३६।।

अपूर्णे शत्रुसामग्री पूर्णे वा स्वबलं तथा।
कुरुते पूर्णतत्त्वस्थो जयत्येको वसुन्धराम्।।२३७।।

शत्रु-सेना शून्यस्वर की ओर अपनी सेना पूर्णस्वर की ओर खड़ी कर युद्ध करने वालों को अवश्य विजय मिलती है।।२३७।।

या नाडी वहते चाङ्गे तस्यामेवाधिदेवता।
सम्मुखेऽपि दिशा तेषां सर्वकार्यफलप्रदा।।२३८।।

जिस ओर का स्वर चलता हो, उसके देवता की दिशा की ओर उस ओर का पाँव रखकर यात्रा करने से सिद्धि प्राप्त होती है।।२३८।।

आदौ तु क्रियते मुद्रा पश्चाद्युद्धं समाचरेत्।
सर्पमुद्रा कृता येन तस्य सिद्धिर्न संशयः।।२३९।।

पहले मुद्रा कर पश्चात् युद्ध करें। सर्पमुद्रा करने से सभी कार्यों में सिद्धि मिलती है।।२३९।।

चन्द्रप्रवाहेऽप्यथ सूर्यवाहे,
भटाः समायान्ति च योद्धुकामाः।
समीरणस्तत्त्वविदां प्रतीतो,
या शून्यता सा अतिकार्यनाशम्।।२४०।।

चन्द्र अथवा सूर्यस्वर में योद्धा लोग युद्ध जब करते हैं, उस समय यदि उनके स्वरों में वायु तत्त्व पूर्ण उदित हो तो विजय और आकाशतत्त्व उदित हो तो पराजय प्राप्त करते हैं।।२४०।।

यां दिशं वहते वायुर्युद्धे तद्दिशि दापयेत्।
जयत्येव न सन्देहः शक्रोऽपि यदि चाग्रतः।।२४१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिस ओर के स्वर में वायुतत्त्व उदित हो, उस ओर खड़ा होकर युद्ध करनेवालों की पराजय इन्द्र भी नहीं कर सकता है।।२४१।।

तत्र नाड्यां वहेद्वायुस्तदङ्गे प्राणमेव च।
आकृष्य गच्छेत्कर्णान्तं जयत्येव पुरन्दरम्।।२४२।।

जिस ओर की नाड़ी में वायुतत्त्व उदित हो, उस ओर के कान तक प्राण को खींचकर युद्ध करनेवाला इन्द्र को भी जीतता है।।२४२।।

प्रतिपक्षप्रहारेभ्यः पूर्णाङ्गं योऽभिरक्षति।
न तस्य रिपुभिः शक्तिर्बलिष्ठैरपि हन्यते।।२४३।।

शत्रुओं के आघातों से अपने शरीर की रक्षा करने वाले को शक्तिमान् शत्रु कभी नहीं हरा सकता है।।२४३।।

अंगुष्ठतर्जनीवंशे पादांगुष्ठे तथा ध्वनिः।
युद्धकाले च कर्त्तव्या लक्षयोधृजयी भवेत्।।२४४।।

वह शूर लाखों शत्रुओं को हराता है, युद्ध के समय जिसके अँगूठे और तर्जनी के पोर में और पाँव के अँगूठे में शब्द हो।२४४।।

निशाकरे रवौ चारे मध्ये यस्य समीरणः।
स्थितो रक्षेद्दिगन्तानि जयाकांक्षीगतः सदा।।२४५।।

चन्द्र या सूर्य स्वर में वायु तत्त्व उदित रहने पर युद्ध के लिए यात्रा करनेवाला चारों दिशाओं की रक्षा करता है।।२४५।।

श्वासप्रवेशकाले तु दूतो जल्पति वाञ्छितम्।
तस्यार्थः सिद्धिमायाति निर्गमेनैव सुन्दरि।।२४६।।

श्वांस लेते समय दूत यदि इच्छित बात को कहता है तो उसका कार्य सिद्ध होता है और श्वांस छोड़ते समय सिद्ध नहीं होता है।।२४६।।

लाभादीन्यपि कार्याणि पृष्ठानि कीर्तितानि च।
जीवे विशतिसिद्ध्यन्ति हानिर्निस्सरणे भवेत्।।२४७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाभ आदि के विषय में पूछे या कहे गये कार्य (श्वांस लेते समय) सिद्ध होते हैं। श्वांस छोड़ते समय कार्य-हानि होती है।।२४७।।

नरे दक्षा स्वकीया च स्त्रियां वामा प्रशस्यते।
कुम्भको युद्धकाले च तिस्रो नाड्यत्रयीं गतिः।।२४८।।

पुरुष का दक्षिण और स्त्री का बायाँ स्वर उत्तम होता है। युद्ध कार्य में कुम्भक उत्तम होता है। इस प्रकार तीनों नाड़ियों की तीन गतियाँ हैं।।२४८।।

हकारस्य सकारस्य विना भेदं स्वरः कथम्।
सोऽहं-हंसपदेनैव जीवो जयति सर्वदा।।२४९।।

'ह' कार और 'स' कार भेद के ज्ञान के बिना स्वरज्ञान कैसे हो सकता है? 'सोऽहं हंस' इनके ज्ञान से ही प्राणी जय लाभ करता है।।२४९।।

शून्याङ्गपूरितं कृत्वा जीवाङ्गे गोपयेज्जयम्।
जीवाङ्गं घातमाप्नोति शून्याङ्गं रक्षते सदा।।२५०।।

शून्य अंग को पूर्णकर जीव के अङ्ग की रक्षा करने से विजय होती है, जीवांग को हानि होती है, यदि शून्य रक्षा करता है।।२५०।।

वामे वा यदि वा दक्षे यदि पृच्छति पृच्छकः।
पूर्णो घातो न जायेत शून्ये घातं विनिर्दिशेत्।।२५१।।

चन्द्र अथवा सूर्यस्वर की पूर्णावस्था में उस ओर आकर यदि कोई प्रश्न करे तो घात नहीं होता है और यदि शून्य स्वर में पूछे तो घात होता है।।२५१।।

भूतत्त्वेनोदरे घातः पदस्थानेऽम्बुना भवेत्।
ऊरुस्थानेऽग्नितत्त्वेन करस्थाने च वायुना।।२५२।।

प्रश्न के समय पृथ्वीतत्त्व उदित हो तो पेट में, जलतत्त्व हो तो पाँव में, अग्नितत्त्व हो तो जाँघों में और वायुतत्त्व हो तो हाथों में चोट लगती है।।२५२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिरसि व्योमतत्त्वे च ज्ञातव्यो घातनिर्णयः।
एवं पञ्चविधो घातः स्वरशास्त्रे प्रकाशितम्।।२५३।।

आकाशतत्त्व के उदय में मस्तक में चोट लगती है। इस प्रकार पाँच प्रकार के आघातों का निर्णय इस स्वर शास्त्र में है।।२५३।।

युद्धकाले यदा चन्द्रः स्थायी जयति निश्चितम्।
यदा सूर्यप्रावहस्तु यायी विजयते तदा।।२५४।।

चन्द्रस्वर में राजा अपने राज्य में रहकर ही शत्रु-नाश करता है। सूर्यस्वर में युद्धस्थल में जाकर युद्ध में विजय प्राप्त करता है।।२५४।।

जयमध्ये तु सन्देहे नाडी मध्ये तु लक्षयेत्।
सुषुम्नायां गते प्राणे समरे शत्रुसङ्कटम्।।२५५।।

यदि विजय में सन्देह हो तो नाड़ी के विषय में सोचे। युद्ध में सुषुम्ना नाड़ी चलने पर संकट प्राप्त होते हैं।।२५५।।

यस्या नाड्या भवेच्चारस्तां दिशं यदि संश्रयेत्।
तदासौ जयमाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा।।२५६।।

जिस ओर का स्वर चलता हो, उस दिशा की ओर मुँहकर या रहकर युद्ध करने से निःसंदेह विजय प्राप्त होती है।।२५६।।

यदि संग्रामकाले तु वामनाडी यदा वहेत्।
स्थायिनो विजयं विद्याद्रिपुवश्यादयोऽपि च।।२५७।।

यदि इडा नाड़ी प्रवाहित हो तो राज्य में होनेवाले युद्ध में विजय प्राप्त होकर शत्रु वश में होते हैं।।२५७।।

यदि संग्रामकाले तु सूर्यस्तु व्यावृतो वहेत्।
तदा यायिजयं विद्यात्सदेवासुरमानवे।।२५८।।

युद्ध समय में सूर्य नाड़ी चलने पर युद्धस्थल में जानेवाले राजा को देव, असुर एवं मानव पर विजय प्राप्त होती है।।२५८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रणे हरति शत्रुस्तं वामायां प्रविशेन्नरः।
स्थानं विषुवचारेण जयः सूर्येण धावता।।२५९।।

चन्द्रस्वर में आक्रमण करने वाले को शत्रु हराते हैं, सुषुम्ना में उसको स्थान की प्राप्ति होती है। सूर्यस्वर में विजय मिलती है।।२५९।।

युद्ध द्वये कृते प्रश्ने तूर्णस्य प्रथमे जयः।
रिक्ते चैव द्वितीयस्तु जयो भवति नान्यथा।।२६०।।

पूर्णस्वर के प्रवाह के समय युद्ध विषयक दो मनुष्य के प्रश्न पूछने पर पहला विजयी और दूसर पराभूत होता है। शून्य स्वर में प्रश्न किये जाने पर पहला पराभूत और दूसरा विजयी होता है।।२६०।।

पूर्णनाडीगतः पृष्ठे शून्याङ्गं च तदाग्रतः।
शून्यस्थाने कृतः शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः।।२६१।।

पूर्ण नाड़ी के समय युद्ध में जाने से शत्रु भागता है, शून्य नाड़ी में जाने से शत्रु मुकाबला करता है। शून्य स्थान की ओर शत्रु अवश्य ही मारता है।।२६१।।

वामचारे समं नाम यस्य तस्य जयो भवेत्।
पृच्छको दक्षिणे भागे विजयी विषमाक्षरः।।२६२।।

चन्द्रस्वर में बाँयीं ओर से आकर जय के या अन्य कार्य के विषय में प्रश्न पूछे जाने पर उस प्रश्न के अक्षर यदि सम (२-४-६) हों तो विजय और विषम (१-३-५) हों तो पराजय होती है।।२६२।।

यदा पृच्छति चन्द्रस्य तदा सन्धानमादिशेत्।
पृच्छेद् यदा तु सूर्यस्य तदा जानीहि विग्रहम्।।२६३।।

चन्द्रस्वर में युद्ध के विषय में प्रश्न करने पर सन्धि और सूर्यस्वर में पूछने पर युद्ध का होना जानिए।।२६३।।

पार्थिवं च समं युद्धं सिद्धिर्भवति वारुणे।
युद्धे हि तेजसो भङ्गो मृत्युर्वायौ नभस्यपि।।२६४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

युद्ध का आरम्भ पृथ्वीतत्त्व में होने पर हार-जीत बराबर होती है। जलतत्त्व में विजय, तेजतत्त्व में अङ्ग-भङ्ग और वायु एवं आकाशतत्त्व में मृत्यु होती है।।२६४।।

निमित्तात्प्रमादाद्वायुर्यदा न ज्ञायतेऽनिलः।

पृच्छाकाले तदा कुर्यादिदं यत्नेन बुद्धिमान्।।२६५।।

किसी कारण से अथवा प्रमांद से प्रश्न के समय जो चन्द्र या सूर्यस्वर नहीं जानता वह निम्न प्रकार से कार्य करे।।२६५।।

निश्चलां धारणां कृत्वा पुष्पं हस्तान्निपातयेत्।

पूर्णाङ्गे पुष्पपतनं वा शून्यं तत्परं भवेत्।।२६६।।

एकाग्र चित्त होकर हाथ से फूलों को गिराने पर शरीर के जिस ओर फूल गिरे उस ओर का स्वर पूर्ण और जिस ओर फूल न गिरे उस ओर के अङ्ग को शून्य समझना चाहिये।।२६६।।

तिष्ठन्नुपविशन्नपि प्राणमाकर्षयन्निजम्।

मनोभङ्गमकुर्वाणः सर्वकार्येषु जीवति।।२६७।।

खड़े होकर या बैठकर प्राणायाम करते समय जिसका मनोभङ्ग नहीं होने पाता, वह सभी कार्यों में सफल होता है।।२६७।।

न कालो विविधं घोरं न शस्त्रं न च पन्नगाः।

न शत्रुव्याधिचौराद्याः शून्यस्थान्नाशितुं क्षमाः।।२६८।।

शून्य अंग में स्थित होने पर काल, भयङ्कर शस्त्र, सर्प, शत्रु, रोग, चोर आदि विपत्तियाँ मनुष्य को नष्ट नहीं करती हैं।।२६८।।

जीवेन स्थापयेद्वायुं जीवेनारम्भयेत् पुनः।

जीवेन क्रीडते नित्यं द्यूते जयति सर्वथा।।२६९।।

जीव से वायु की स्थापना करे और प्रारम्भ करे। जीव के साथ जो क्रीडा करता है, वह जुए में निश्चित जीतता है।।२६९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वरज्ञानबलादग्रे निष्फलं कोटिधा भवेत्।

इह लोके परत्रापि स्वरज्ञानी बली सदा।।२७०।।

स्वर-बल के समान अन्य कोटियों (प्रकारों) का बल निष्फल है। यहाँ और स्वर्ग में स्वर ज्ञानी सर्वदा प्रबल होता है।।२७०।।

दशशतायुतलक्षं दशाधिकबलं क्वचित्।

दशाक्रतु-सुरेन्द्राणां बलकोटिगुणं भवेत्।।२७१।।

स्वरबल से राजा को हजार, दस हजार या लाख वीरों का बल प्राप्त होता है। इन्द्रादि देवों को बल इससे कोटि गुणित होता है।।२७१।।

देवी उवाच

परस्परं मनुष्याणां युद्धे प्रोक्तो जयस्त्वया।

यमयुद्धे समुत्पन्ने मनुष्याणां कथं जयः।।२७२।।

पार्वतीजी ने कहा—हे शिवजी! आपने मनुष्यों के युद्धों के जय के विषय में कहा, किन्तु यम के साथ होने वाले युद्ध में जय कैसे मिलेगा।।२७२।।

शिव उवाच

ध्यायेद् देवं स्थिरो जीवं जुहुयाज्जीवसङ्गमे।

इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य महालाभो जयस्तथा।।२७३।।

शिवजी ने कहा—एकाग्रचित होकर भगवान् का ध्यान कर जीव संगम में अर्थात् कुम्भक में जीव का होम करने से उसको अष्टसिद्धि, जय आदि महालाभ प्राप्त होते हैं।।२७३।।

निराकारत्समुत्पन्नं साकारं सकलं जगत्।

तत्साकारं निराकारं ज्ञानं भवति तत्क्षणात्।।२७४।।

निराकार ईश्वर से ही इस संसार की सृष्टि हुई है। ईश्वर विषयक ज्ञान के द्वारा यह साकार संसार निराकार मालूम होता है।।२७४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवी उवाच

नर-युद्धं यम-युद्धं त्वया प्रोक्तं महेश्वर।
इदानीं देवि-देवानां वशीकरणकं वद।।२७५।।

देवी ने कहा–आपने मानव-युद्ध और यम-युद्ध कहा। किन्तु अब देवी-देवताओं को वश में करने का उपाय कहिये?।।२७५।।

शिव उवाच

चन्द्रं सूर्येण चाकृष्य स्थापयेज्जीवमण्डले।
आजन्मवशगा रामा कथितेयं तपोधनैः।।२७६।।

शिवजी ने कहा–स्त्री के चन्द्रस्वर को पुरुष के सूर्यस्वर से खींचकर जीवमण्डल में रखने से जन्मभर स्त्री वश में होती है ऐसा ऋषियों ने कहा है।।२७६।।

जीवेन गृह्यते जीवो जीवो जीवस्य दीयते।
जीवस्थाने गतो जीवो बाला जीवान्तकारकः।।२७७।।

जो स्त्री को अपनी जीवस्वर (इडा या पिंगलानाड़ी) देकर उसका जीव स्वर लेता है और उसे जीवस्थान में रखता है, तो स्त्री का जीव उसके वश में रहता है।।२७७।।

रात्र्यन्तयामवेलायां प्रसुप्ते कामिनीजने।
ब्रह्मजीवं पिबेद्यस्तु बालाप्राणहरो नरः।।२७८।।

रात्रि के अन्त में सोई हुई स्त्री के (ब्रह्मजीव सुषुम्ना स्वर) को जो पीता है उसकी स्त्री वश में होती है।।२७८।।

अष्टाक्षरं जपित्वा तु तस्मिन्काले गते सति।
तत्क्षणं दीयते चन्द्रो मोहमायाति कामिनी।।२७९।।

सुषुम्ना के समय के उपरान्त अष्टाक्षर मन्त्र को जपकर स्त्री को जो व्यक्ति अपना चन्द्रस्वर देता है, वह स्त्री को मोहित करता है।।२७९।।

शयने वा प्रसङ्गे वा युवत्यालिङ्गनेऽपि वा।
यः सूर्येण पिबेच्चन्द्रं स भवेन्मकरध्वजः।।२८०।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोते समय या प्रसंग के समय स्त्री के चन्द्रस्वर को सूर्य स्वर से पीनेवाला मनुष्य साक्षात् कामदेव होता है॥२८०॥

शिमालिङ्ग्यते शक्त्या प्रसंगे दक्षिणेऽपि वा।
तत्क्षणाद्दापयेद्यस्तु मोहयेत्कामिनी शतम्।।२८१।।

पुरुष का सूर्यस्वर और स्त्री का चन्द्रस्वर प्रसंग के समय एक हो जाने से या स्त्री के सूर्यस्वर में अपना चन्द्रस्वर मिलाने से सौ स्त्रियों को भी वह पुरुष मोहित करता है॥२८१॥

सप्त नव त्रयः पञ्च वारान् सङ्गस्तु सूर्यभे।
चन्द्रे द्विचतुर्थषट् कृत्वा वश्या भवति कामिनी।।२८२।।

स्त्री के सूर्यस्वर में अपने चन्द्रस्वर को मिलाकर विषम समय में और स्त्री के चन्द्रस्वर में अपने सूर्य स्वर को मिलाकर सम समय में जो गमन करता है, तो स्त्री उसके वश होती है॥२८२॥

सूर्यचन्द्रौ समाकृष्य सर्पाक्रान्त्याधरोष्ठयोः।
महापद्मे मुखं स्पृष्ट्वा वारं वारमिदं चरेत्।।२८३।।

सर्प की तरह सूर्य या चन्द्रस्वर को खींचकर बार-बार चूमने से स्त्री वश में होती है॥२८३॥

आप्राणमिति पद्मस्य यावन्निद्रावशं गता।
पश्चाज्जागर्ति वेलायां चोष्यते गलचक्षुषोः।।२८४।।

स्त्री के सोते समय तक चुम्बन करना और जागने पर उसके गले और नेत्र को चूमना उसको वश में कराता है॥२८४॥

अनेन विधिना कामी वशयेत्सर्वकामिनीः।
इदं न वाच्यमन्यस्मिन्नित्याज्ञा परमेश्वरि।।२८५।।

हे पार्वती! इस विधि से कामियों को स्त्रियों को वश में करना चाहिये। यह वशीकरण किसी को नहीं कहना चाहिये, ऐसी मेरी आज्ञा है॥२८५॥

इति वशीकरणम्।

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गर्भ-प्रकरणम्

ऋतुकालभवा नारी पञ्चमेऽह्नि यदा भवेत्।
सूर्यचन्द्रमसोर्योगं सेवनात्पुत्रसम्भवः।।२८६।।

ऋतुकाल के पाँचवें दिन स्त्री के चन्द्रस्वर में और पति के सूर्यस्वर में गमन करने से पुत्र की प्राप्ति होती है।।२८६।।

शङ्खबल्ली गवां दुग्धं पृथिव्यापो वहेद्यदा।
भर्तुरेव वदेद्वाक्यं गर्भं देहि त्रिभिर्वचः।।२८७।।

ऋतु स्नान के बाद पृथ्वी या जलतत्त्व के उदय में शंखबल्ली जड़ी गौ के दूध में मिलाकर पीने के बाद पति से संभोग की प्रार्थना तीन बार करनी चाहिये।।२८७।।

ऋतुस्नाता पिबेन्नारी ऋतुदानं तु योजयेत्।
रूपलावण्यसम्पन्नो नरसिंहः प्रसूयते।।२८८।।

ऋतु स्नान के बाद शंखबल्ली पीकर समागम करने से रूपलावण्य युक्त पराक्रमी पुत्र होता है।।२८८।।

सुषुम्ना सूर्यवाहेन ऋतुदाने तु योजयेत्।
अङ्गहीनः पुमान् यस्तु जायते त्रासविग्रहः।।२८९।।

सूर्य स्वर के बाद सुषुम्ना स्वर में गमन करने से अंगरहित कुरूप पुत्र होता है।।२८९।।

विषमाङ्के दिवारात्रौ विषमाङ्के दिनाधिपः।
चन्द्रनेत्राग्नितत्त्वेषु वन्ध्या पुत्रमाप्नुयात्।।२९०।।

ऋतुस्नान के बाद विषम दिनों में, पति के सूर्यस्वर में और स्त्री के अग्नितत्त्वयुक्त चन्द्रस्वर में दिन या रात्रि में भोग करने से वन्ध्या स्त्री को भी पुत्र होता है।।२९०।।

ऋत्वारम्भे रविः पुंसां स्त्रीणां चैव सुधाकरः।
उभयोः सङ्गमे प्राप्ते वन्ध्या पुत्रमवाप्नुयात्।।२९१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऋतु के आरम्भ में पति के सूर्य और स्त्री के चन्द्रस्वर में भोग करने से वन्ध्या को भी पुत्र होता है॥२९१॥

ऋत्वारम्भे रविः पुंसां शुक्रान्ते च सुधाकरः।
अनेन क्रमयोगेन नादत्तं देवदारुकम्॥२९२॥

भोग के प्रारम्भ में पति का सूर्यस्वर और भोग के अन्त में चन्द्रस्वर चलने पर ऐसे महायोग में भाग्यहीन को छोड़कर अन्य लोगों को पुत्र की प्राप्ति होती है॥२९२॥

चन्द्रनाडी यदा प्रश्ने गर्भे कन्या तदा भवेत्।
सूर्यो भवेत्तदा पुत्रो द्वयोर्गर्भो विहन्यते॥२९३॥

सन्तति के विषय में प्रश्न करते समय यदि चन्द्रस्वर प्रवाहित हो तो कन्या, सूर्यस्वर हो तो पुत्र और सुषुम्ना चलती हो तो गर्भनाश होगा, यह समझना चाहिये॥२९३॥

पृथिव्यां पुत्री जले पुत्रः कन्यका तु प्रभञ्जने।
तेजसि गर्भपातः स्यान्नभस्यपि नपुंसकः॥२९४॥

प्रश्न करते समय पृथ्वीतत्त्व उदित हो तो कन्या, जलतत्त्व हो तो पुत्र, वायुतत्त्व में कन्या, अग्नितत्त्व में गर्भनाश, आकाशतत्त्व में नपुंसक होता है॥२९४॥

चन्द्रे स्त्री पुरुषः सूर्ये मध्यमार्गे नपुंसकः।
गर्भप्रश्ने यदा दूतः पूर्णे पुत्रः प्रजायते॥२९५॥

प्रश्न के समय चन्द्रस्वर हो तो कन्या, सूर्यस्वर हो तो पुत्र और सुषुम्ना हो तो नपुंसक होता है। पूर्णाङ्ग की ओर स्थित होकर प्रश्न करने पर पुत्र होता है॥२९५॥

शून्ये शून्यं युगे युग्मं गर्भपातश्च सङ्क्रमे।
तत्त्ववित्स विजानीयात्कथितं तत्तु सुन्दरि॥२९६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शून्यस्वर में प्रश्न करने पर शून्य (अभाव), दो स्वरों में युग्म, मिश्रित स्वरों में गर्भनाश होता है, ऐसा स्वर-ज्ञाता कहते हैं॥२९६॥

गर्भाधानं मारुते स्याच्च दुःखी
दिक्षु ख्यातो वारुणे सौख्ययुक्तः।
गर्भस्त्रावः स्वल्पजीवश्च वह्नौ
भोगी भव्यः पार्थिवेनार्थयुक्तः।।२९७।।

वायुतत्त्व में गर्भाधान होने से पुत्र दुःखी, जलतत्त्व में ख्याति और सुख युक्त, तेजतत्त्व में गर्भनाश या अल्पायु, पृथ्वी तत्त्व में भोगी, सम्पत्तिशाली और बलवान् पुत्र होता है॥२९७॥

धनवान् सौख्ययुक्तश्च भोगवानर्थसंस्थितिः।
स्यान्नित्यं वारुणे तत्त्वे व्योम्निगर्भो विनश्यति।।२९८।।

जलतत्त्व में गर्भाधान होने से पुत्र धनवान्, सुखी, भोगी और भाग्यवान् होता है। आकाशतत्त्व में गर्भ-नाश होता है॥२९८॥

माहेन्द्रे सुसुतोत्पत्तिर्वारुणे दुहिता भवेत्।
शेषेषु गर्भहानिः स्याज्जातमात्रस्य वा मृतिः।।२९९।।

पृथ्वीतत्त्व में उत्तम पुत्र, जलतत्त्व में कन्या और अन्य तत्त्वों में गर्भनाश होता है या उत्पन्न होकर नष्ट होता है॥२९९॥

रविमध्यगतश्चन्द्रश्चन्द्रमध्यगतो रविः।
ज्ञातव्यं गुरुतः शीघ्रं न वेदैः शास्त्रकोटिभिः।।३००।।

सूर्यस्वर में चन्द्रस्वर या चन्द्रस्वर में सूर्यस्वर चलने पर इसका फल गुरु से ही पूछना चाहिये। गुरु के बिना वेद शास्त्र आदि इसको नहीं कह सकते हैं॥३००॥

इति गर्भप्रकरणं समाप्तम्।

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संवत्सरफलम्

चैत्र-शुक्ल-प्रतिपदि प्रातस्तत्त्वविभेदतः।
पश्येद्विचक्षणो योगी दक्षिणे चोत्तरायणे।।३०१।।

बुद्धिमान् योगी चैत्रशुक्लपक्ष की प्रतिपदा को प्रातःकाल तत्त्वों के भेद से उत्तरायण और दक्षिणायन के विषय में विचार करें।।३०१।।

चन्द्रोदयस्य वेलायां वहमानोऽथ तत्त्वतः।
पृथिव्यापस्तथा वायुः सुभिक्षं सर्वसस्यजम्।।३०२।।

उस दिन सुबह चन्द्रस्वर में पृथ्वी, जल या वायुतत्त्व उदित हो तो उस वर्ष बहुत अन्न उत्पन्न होता है।।३०२।।

तेजोव्योम्नोर्भयं घोरं दुर्भिक्षं कालतत्त्वतः।
एवं तत्त्वफलं ज्ञेयं वर्षे मासे दिनेष्वपि।।३०३।।

यदि अग्नि या आकाशतत्त्व उस समय उदित हो तो भयंकर संकट और दुर्भिक्ष होता है। इस प्रकार वर्ष, मास और दिन के फल तत्त्वों से जानने चाहिये।।३०३।।

मध्यमा भवति क्रूरा दुष्टा सर्वेषु कर्मसु।
देशभङ्गः महारोगः क्लेशकष्टादि दुःखदा।।३०४।।

सुषुम्ना नाड़ी कार्यों में क्रूर है। उसके प्रवाह में कार्य करने से देश नाश, महारोग, दुःख, कष्ट आदि होते हैं।।३०४।।

मेषसङ्क्रान्ति-वेलायां स्वरभेदं विचारयेत्।
संवत्सरफलं ब्रूयाल्लोकानां तत्त्वचिन्तकः।।३०५।।

तत्त्व को जाननेवाले मेषसंक्रान्ति के समय में स्वरभेद का विचार करें और वर्षफल भी उसी समय कहें।।३०५।।

पृथिव्यादिकतत्त्वेन दिनमासाब्दजं फलम्।
शोभनं च यथा दुष्टं व्योममारुतवह्निभिः।।३०६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथ्वी आदि तत्त्वों से दिन, मास और वर्षफल का विचार करें। उस समय पृथ्वी या जलतत्त्व उदित हो तो फल शुभ और अग्नि, वायु या आकाशतत्त्व उदित हो तो अशुभ फल होते हैं।।३०६।।

सुभिक्षं राष्ट्रवृद्धिः स्याद् बहुसस्या वसुन्धरा।
बहुवृष्टिस्तथा सौख्यं पृथ्वीतत्त्वं वहेद्यदि।।३०७।।

पृथ्वीतत्त्व उदित हो तो उस वर्ष राष्ट्रवृद्धि, सुभिक्ष, उत्तम कृषि, बहुत वृष्टि और सुख उत्पन्न होते हैं।।३०७।।

अतिवृष्टिः सुभिक्षं स्यादारोग्यं सौख्यमेव च।
बहुसस्या तथा पृथ्वी अप्तत्त्वं वै वहेद यदि।।३०८।।

जल तत्त्व में अतिवृष्टि, सुभिक्ष, आरोग्य, सौख्य, धान्य की प्रचुरता आदि होते हैं।।३०८।।

दुर्भिक्षं राष्ट्रभङ्गः स्यादुत्पत्तिश्च विनश्यति।
अल्पादल्पतरा वृष्टिरग्नितत्त्वं वहेद् यदि।।३०९।।

तेज तत्त्वों में दुर्भिक्ष, राष्ट्रनाश, धान्य नाश तथा बहुत कम वृष्टि होती है।।३०९।।

उत्पातोपद्रवो भीतिरल्पा वृष्टिः स्युरीतयः।
मेषसङ्क्रान्तिवेलायां वायुतत्त्वं वहेद् यदि।।३१०।।

मेष संक्रान्ति के समय वायुतत्त्व उदित रहने से उत्पात, उपद्रव, भय तथा थोड़ी वृष्टि होती है।।३१०।।

मेषसङ्क्रान्तिवेलायां व्योमतत्त्वं वहेद् यदि।
तत्रापि शून्यता ज्ञेया सस्यादीनां सुखस्य च।।३११।।

उस समय आकाश तत्त्व हो तो उस वर्ष सुख, धान्य आदि का अभाव होता है।।३११।।

पूर्णप्रवेशने श्वासे सस्य तत्त्वेन सिद्ध्यति।
सूर्यचन्द्रेऽन्यथा भूते संग्रहः सर्वसिद्धिदः।।३१२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्ण श्वांसों को भीतर खींचने पर उसमें के तत्त्वों द्वारा सस्यों का निर्माण होता है। उस समय सूर्य या चन्द्र स्वर उलटा चलता हो तो सस्य (धान्य) का संग्रह सिद्धिदायक होता है।३१२॥

विषमे वह्नितत्त्वं स्याज्ज्ञायते केवलं नभः।
तत्कुर्याद्वस्तुसंग्राहो द्विमासे च महर्घता॥३१३॥

विषम (सूर्य) स्वर में तेज तत्त्व उदित हो किन्तु आकाश तत्त्व भी उदित मालूम हो तो अन्न संग्रह करना उत्तम होता है। क्योंकि दो महीने में महँगी बढ़ जाती है॥३१३॥

रवौ सङ्क्रमते नाडी चन्द्रमन्ते प्रसर्पिता।
खानिले वह्नियोगेन रौरवं जगतीतले॥३१४॥

रात को नाड़ी संक्रमण के बाद सूर्य स्वर और प्रात:काल चन्द्र स्वर यदि प्रवाहित हो और उनमें अग्नि, वायु या आकाश तत्त्व उदित हो तो अनेक अनर्थ होते हैं और पृथ्वी पर ही रौरव नरक का दृश्य दिखाई देता है॥३१४॥

इति संवत्सरफलं समाप्तम्।

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगप्रकरणम्

महातत्त्वे स्वरोगश्च जले च जलमातृतः।
तेजसि खेटावाटीस्थ-शाकिनीपितृदोषतः।।३१५।।

अब रोग प्रकरण कहते हैं—

प्रश्न करते समय यदि पृथ्वी तत्त्व उदित हो तो पूर्व जन्म के पाप के द्वारा हुआ रोग, जल तत्त्व हो तो जल मातृका रोग, अग्नि तत्त्व हो तो ग्राम या पहाड़ों में वास करने वाली शाकिनी का या पितरों का दोष समझना चाहिये।।३१५।।

आदौ शून्यगतो दूतः पश्चात्पूर्णे विशेद्यदि।
मूर्छितोऽपि ध्रुवं जीवेद् यदर्थं प्रतिपृच्छति।।३१६।।

पृच्छक पहले शून्य स्वर की ओर बैठे और बाद में पूर्ण स्वर की ओर बैठकर, यदि रोगी के बारे में प्रश्न करे तो मूर्छित रोगी अवश्य जीवित हो जाता है।।३१६।।

यस्मिन्नङ्गे स्थितो जीवस्तत्रस्थः परिपृच्छति।
तदा जीवति जीवोऽसौ यदि रोगैरुपद्रुतः।।३१७।।

पूर्ण स्वर की ओर बैठकर यदि कोई रोगी के बारे में प्रश्न करता है या वह स्वयं रोगी है तो वह अनेक रोगों से ग्रसित रहने पर भी मर नहीं सकता।।३१७।।

दक्षिणेन यदा वायुर्दूतो रौद्राक्षरो वदेत्।
तदा जीवित जीवोऽसौ चन्द्रे समफलं भवेत्।।३१८।।

सूर्य स्वर चलते समय प्रश्न करने वाला यदि कोई भयानक बात कहे तो रोगी जीवित रहता है। चन्द्रस्वर में फल समान होता है।।३१८।।

जीवाकारं च वा धृत्वा जीवाकारं विलोक्य च।
जीवस्थो जीवितप्रश्ने तस्य स्याज्जीवितं फलम्।।३१९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीव के आकार को धारण कर, जीव के स्वरूप को देखकर और जीव में स्थित प्रश्नकर्ता को जीवन प्राप्त होता है॥३१९॥

वामाचारे तथा दक्षे प्रवेशे यत्र वाहने।
तत्रस्थः पृच्छते दूतस्तस्य सिद्धिर्न संशयः।।३२०।।

सूर्य या चन्द्र स्वर के अन्दर प्रविष्ट होते समय जीवों की ओर बैठकर प्रश्न कर्ता के प्रश्न करने से रोगी अवश्य अच्छा होता है॥३२०॥

प्रश्ने चाधः स्थितो जीवो नूनं जीवो हि जीविते।
ऊर्ध्वचारस्थितो जीवो जीवो याति यमालयम्।।३२१।।

जीवांग से नीचे खड़ा होकर प्रश्न करने से रोगी जीवित और ऊपर की ओर से प्रश्न करने से मृत समझना चाहिये॥३२१॥

विपरीताक्षरप्रश्ने रिक्तायां पृच्छको यदि।
विपर्ययं च विज्ञेयं विषमस्योदये सति।।३२२।।

प्रश्न कर्ता के शून्य नाड़ी की ओर बैठकर विपरीत अक्षरों का विषम नाड़ी के प्रवाह में प्रश्न करने से फल उल्टा होता है॥३२२॥

चन्द्रस्थाने स्थितो जीवः सूर्यस्थाने तु पृच्छकः।
तदा प्राणवायुक्तोऽसौ यदि वैद्यशतैर्वृतः।।३२३।।

चन्द्र स्थान में प्राण हो और प्रश्नकर्ता सूर्य स्थान की ओर बैठकर प्रश्न करता है तो रोगी सैकड़ों वैद्यों से घिरा होने पर भी जीवित नहीं रहता॥३२३॥

पिङ्गलायां स्थितो जीवः वामे दूतस्तु पृच्छति।
तदाऽपि म्रियते रोगी यदि त्राता महेश्वरः।।३२४।।

यदि प्रश्नों को पूछनेवाला बाँयी ओर बैठकर प्रश्न करे और उस समय सूर्य स्वर चलता हो तो शिवजी के बचाने पर भी रोगी मरता है॥३२४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकस्य भूतस्य विपर्ययेण
रोगाभिभूतिर्भवतीह पुंसाम्।
तयोर्द्वयोर्बन्धुसुहृद्विपत्तिः
पक्षद्वये व्यत्ययतो मृतिः स्यात्।।३२५।।

एक तत्त्व की विपरीत दशा में रोगों का आक्रमण, दो की विपरीत दशा में बन्धु, सुहृत् आदि का वियोग और एक मास तक स्वर विपरीत दशा में होने से मृत्यु होती है।।३२५।।

इति रोगप्रकरणं समाप्त।

*

कालप्रकरणम्

मासादौ चैव पक्षादौ वत्सरादौ यथाक्रमम्।
क्षयकालं परीक्षेत वायुचारवशात् सुधीः।।३२६।।

अब काल प्रकरण कहते हैं—

पण्डित लोगों को मास, पक्ष, वर्ष, आदि के प्रारम्भ में क्रमानुसार वायु के प्रवाह को जानकर मृत्यु की परीक्षा करनी चाहिये।।३२६।।

पञ्चभूतात्मकं दीपं शिवस्नेहेन सिञ्चितम्।
रक्षयेत्सूर्यवातेन प्राणजीवः स्थिरः भवेत्।।३२७।।

शरीररूप पंचमहाभूतात्मक दीप श्वांस रूप शिव रूप तेल से सिंचित और सूर्य (स्वर) रूप वायु के रक्षित होने पर उसमें प्राण स्थिर होता है।।३२७।।

मारुतं बन्धयित्वा तु सूर्यं बन्धयते यदि।
अभ्यासाज्जीवते जीवः सूर्यकालेऽपि वञ्चिते।।३२८।।

दिन भर प्राणायाम के द्वारा सूर्य स्वर को रोक कर सूर्यास्त के समय उसको छोड़ने का अभ्यास करनेवाला दीर्घजीवी होता है।।३२८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गगनात् स्रवते चन्द्रः कायपद्मानि सिञ्चयेत्।
कर्मयोग-सदाभ्यासैरमरः शशिसंश्रयात्।।३२९।।

इस प्रकार योगाभ्यास करने वालों के शरीररूप कमलों को आकाश से चन्द्र अमृत से सींचता है और योगी अमर होते हैं।।३२९।।

शशाङ्कं वारयेद्रात्रौ दिवावायोर्दिवाकरः।
इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः।।३३०।।

दिन में सूर्य स्वर को और रात में चन्द्र स्वर को रोकने का अभ्यास करने वाला अवश्य योगी होता है।।३३०।।

अहोरात्रे यदैकत्र वहते यस्य मारुतः।
तदा तस्य भवेन्मृत्युः सम्पूर्णे वत्सरत्रये।।३३१।।

दिन-रात जिसका एक ही स्वर चलता है, उसकी मृत्यु तीन साल के बाद होती है।।३३१।।

अहोरात्रद्वयं यस्य पिङ्गलायां सदा गतिः।
तस्य वर्षद्वयं प्रोक्तं जीवितं तत्त्ववेदिभिः।।३३२।।

दो अहोरात्र (दिनरात) जिसकी पिंगला नाड़ी चलती रहे उसकी आयु दो वर्ष की होती है ऐसा तत्त्व के विद्वान् कहते हैं।।३३२।।

त्रिरात्रं वहते यस्य वायुरेकपुटे स्थितः।
तदा संवत्सरायुस्तं प्रवदन्ति मनीषिणः।।३३३।।

तीन अहोरात्र जिसका एक ही स्वर चले, उसकी मृत्यु एक साल के बाद होती है ऐसा पण्डित कहते हैं।।३३३।।

रात्रौ चन्द्रो दिवा सूर्यो वहेद्यस्य निरन्तरम्।
जानीयात्तस्य वै मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरे भवेत्।।३३४।।

रात में चन्द्र स्वर और दिन में सूर्य स्वर लगातार चले तो छः महीनों के अन्दर मृत्यु होती है।।३३४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्यं लक्षितलक्षणेन सलिले भानुर्यदा दृश्यते
क्षीणो दक्षिणपश्चिमोत्तरपुरः षट्त्रिद्विमासैकतः।
मध्ये छिद्रमिदं भवेद्दशदिनं धूमाकुलं तद्दिने
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुःप्रमाणं स्फुटम्।।३३५।।

काँसे के पात्र में जल भरकर उसमें दिखाई देनेवाले सूर्य का प्रतिबिम्ब दक्षिण दिशा की ओर क्षीण दिखाई दे तो छः महीनों में, पश्चिम में क्षीण दिखाई दे तो तीन महीनों में, उत्तर में क्षीण दिखाई दे तो दो महीनों में, पूर्व में क्षीण दिखाई दे तो एक महीनों में, उस बिम्ब में छेद दिखाई देने पर दस दिनों में और धूएँ से ढका दिखाई देने से उसी दिन मृत्यु होती है, ऐसा सर्वज्ञों ने कहा है।।३३५।।

दूतः कृष्णकषायकृष्णवसनो दन्तक्षतो मुण्डितः
तैलाभ्यक्तशरीररज्जुककरो दीनश्च पूर्णोत्तरः।
भस्माङ्गारकपालपाशमुशलो सूर्योऽस्तमायाति यः
कालीशून्यपदस्थितो गदयुतः कालानलास्यावृतः।।३३६।।

अब दूत के लक्षण कहते हैं—

रोगी के बारे में पूछने के लिये आया हुआ दूत लाल, गेरुआ और काले रंग का वस्त्र यदि पहना हुआ और टूटे हुए दाँतों वाला, मुण्डन किया हुआ, तेल लगाकर और रस्सी लिये हुये आया हुआ, पूर्ण उत्तर देनेवाला और भस्म को लगाकर और शर, पाश, मूसल लेकर आया हुआ, सूर्यास्त के समय शून्य अंग की ओर बैठने से समझना चाहिये कि रोगी काल से घिरा हुआ है।।३३६।।

अकस्माच्चित्तविकृतिरकस्मात्पूरुषोत्तमः।
अकस्मादिन्द्रियोत्पातः सन्निपाताग्रलक्षणम्।।३३७।।

जिसका चित्त एकाएक व्याकुल हो, अकस्मात् स्वस्थ हो जाय और एकाएक इन्द्रियों का उत्पात हो तो उस व्यक्ति को सन्निपात का प्रारम्भ हुआ है ऐसा समझना चाहिये।।३३७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरीरं शीतलं यस्य प्रकृतिर्विकृता भवेत्।
तदरिष्टं समासेन व्यासतस्तु निबोध मे।।३३८।।

जिसका शरीर शीतल और स्वभाव विकृत हुआ हो, उसके इस प्रकार के अरिष्ट को मैं विस्तार से कहता हूँ।।३३८।।

दुष्टशब्देषु रमते शुद्धशब्देषु चाप्यति।
पश्चात्तापो भवेद् यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः।।३३९।।

जिसे खराब शब्द अच्छा और अच्छा शब्द खराब प्रतीत होता है उसको पश्चात्ताप होकर मृत्यु होती है।।३३९।।

हुँकारः शीतलो यस्य फूत्कारो वह्निसन्निभः।
महावैद्यो भवेत्तस्य तस्य मृत्युर्भवेद् ध्रुवम्।।३४०।।

जिसका हुँकार शीतल और फूत्कार अग्नि के समान गरम है, उसकी मृत्यु बहुत बड़े वैद्य की रक्षा में भी अवश्य होती है।।३४०।।

जिह्वा विष्णुपदं ध्रुवं सुरपदं संमातृकामण्डल-
मेतान्येवमरुन्धती मृतगुं शुक्रं ध्रुवं वा क्षणम्।
एतेष्वेकमपि स्फुटं न पुरुषः पश्येत्पुरः प्रेषितः
सोऽवश्यं विशतीह कालवदनं संवत्सरादूर्ध्वतः।।३४१।।

जिसकी जीभ, आकाश, ध्रुव, देवों का मार्ग, मातृमण्डल, अरुन्धति, चन्द्र, शुक्र और अगस्त्य इनमें से एक भी यदि न दिखाई दे तो उसकी मृत्यु निश्चित समझनी चाहिये।।३४१।।

अरश्मिबिम्बं सूर्यस्य वह्नेः शीतांशुमालिनः।
दृष्ट्वैकादशमासायुर्नरश्चोर्ध्वं न जीवति।।३४२।।

जिसको चन्द्र और सूर्य की प्रभा न दिखाई दे और अग्नि तेज विरहित दिखाई देता है, वह ग्यारह महीनों में मरता है।।३४२।।

वाप्यां पुरीषमूत्राणि सुवर्णं रजतं तथा।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासान्न जीवति।।३४३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वप्न में या जागृति में तालाब में, मलमूत्र या सोना, चाँदी जो देखता है, उसकी आयु दस महीनों की होती है।।३४३।।

क्वचित्पश्यति यो दीपं सुवर्णं च कषान्वितम्।
विरूपाणि च भूतानि नवमासान्न जीवति।।३४४।।

जिसको कभी-कभी सोना और दीप काले प्रतीत हों और सभी प्राणी खराब दिखाई दें, उसकी नौ महीनों में मृत्यु होती है।।३४४।।

स्थूलाङ्गोऽपि कृशकृशोऽपि सहसा स्थूलत्वमालभ्यते
प्राप्तो वा कनकप्रभा यदि भवेत्क्रूरोऽपि कृष्णच्छविः।
शूरो भीरुसुधीरधर्मनिपुणः शान्ताविकारीपुमान्
इत्येव प्रकृतिः प्रयाति चलनं मासाष्टकं जीवति।।३४५।।

यदि मोटा अकस्मात् दुबला हो या दुबला एकदम मोटा हो, क्रूर एवं कृष्ण वर्ण वाला सोने की तरह उज्ज्वल हो, शूर, कायर, धार्मिक-अधार्मिक, शान्त, चंचल इस प्रकार के परिवर्तनों से समझना चाहिये कि उसकी मृत्यु आठ महीनों के बाद होगी।।३४५।।

पीडा भवेत्पाणितले च जिह्वा-
मूले तथा स्याद्रुधिरं च कृष्णम्।
विद्धं न स ग्लायति यत्र दृष्ट्या
जीवेन्मनुष्यश्च हि सप्तमासम्।।३४६।।

जिसके हाथ के तलुवे में और जीभ की जड़ में पीड़ा होती हो, जिसका खून काला हो, नोकदार पदार्थों के आघात से अधिक पीड़ा होती हो, उसकी आयु सात महीनों की होती है।।३४६।।

मध्याङ्गुलीनां त्रितयं न वक्रं
रोगं विना शुष्यति यस्य कण्ठः।
मुहुर्मुहुः प्रश्नवशेन जाड्यात्
षड्भिः समाभिः प्रलयं प्रयाति।।३४७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसके हाथ के बीच की तीन अँगुलियाँ टेढ़ी न होती हों, रोग के बिना ही गला सूखता हो और मूर्खतापूर्ण प्रश्न करता हो, तो उसकी आयु छः महीनों की होती है॥३४७॥

न यस्य स्मरणं किञ्चिद्विद्यते भूतकर्मणि।
सोऽवश्यं पञ्चमे मासि स्कन्धारूढो भविष्यति॥३४८॥

जिसको पहले के किये गये कार्यों का स्मरण न होता हो, उसकी पाँचवें महीने में मृत्यु होती है॥३४८॥

यस्य न स्फुरति ज्योतिः पीड्यते नयनद्वयम्।
स्मरणं तस्य निर्दिष्टं चतुर्थे मासि निश्चितम्॥३४९॥

जिसके आँखों की ज्योति प्रकाशित न हो और दोनों आँखों में पीड़ा होती हो। उसकी मृत्यु चार महीनों के बाद ही होती है॥३४९॥

दन्तश्च वृषणौ यस्य न किञ्चिदपि पीड्यते।
तृतीये मासि सोऽवश्यं कालाज्ञायां भवेन्नरः॥३५०॥

दाँतों और अंडकोष में दबाने पर पीड़ा न होती हो तो तीन महीनों की आयु होती है॥३५०॥

कालो दूरस्थितो वापि येनोपायेन लक्ष्यते।
तं वदामि समासेन यथादिष्टं शिवागमे॥३५१॥

शिवागम के अनुसार काल की समीपता या दूरता को जानने के उपायों को संक्षेप से कहता हूँ॥३५१॥

एकान्तं विजनं गत्वा कृत्वाऽऽदित्यं च पृष्ठतः।
निरीक्षेन्निजच्छायां कण्ठदेशे समाहितः॥३५२॥

एकान्त बन में जाकर सूर्य की ओर पीठ कर खड़े होकर एकाग्रचित से अपने कण्ठ की छाया को देखे॥३५२॥

ततश्चाकाशमीक्षेत ह्रीं परब्रह्मणे नमः।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा ततः पश्यति शङ्करम्॥३५३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके बाद आकाश की ओर देखकर एक सौ आठ बार "ह्रीं परब्रह्मणे नमः" इस मन्त्र के जप से शिवजी का दर्शन होता है।।३५३।।

शुद्धस्फटिकसङ्काशं नानारूपधरं हरम्।
षण्मासाभ्यासयोगेन भूचराणां पतिर्भवेत्।
वर्षद्वयेन ते नाथ कर्त्ता हर्त्ता स्वयं प्रभुः।।३५४।।

श्वेत स्फटिक के समान शुभ्र और अनेक रूपों को धारण करने वाले शिवजी के जप के प्रभाव से देखता हुआ योगी छः महीनों के योगाभ्यास से प्राणियों का मालिक और दो वर्ष के अभ्यास से उत्पत्ति व संहारकर्त्ता शिवस्वरूप हो जाता है।।३५४।।

त्रिकालज्ञत्वमाप्नोति परमानन्दमेव च।
सतताभ्यासयोगेन नास्ति किञ्चित्सुदुर्लभम्।।३५५।।

सतत योगाभ्यास से त्रिकालज्ञाता हो जाता है और उसको अत्यन्त महान् आनन्द प्राप्त होता है और उसे कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती।।३५५।।

तद्रूपं कृष्णवर्णं यः पश्यति व्योम्नि निर्मले।
षण्मासान्मृत्युमाप्नोति स योगी नात्र संशयः।।३५६।।

जो स्वच्छ आकाश में शंकरजी को कृष्णवर्ण में देखता है, उसकी आयु छः महीनों की होती है, इसमें सन्देह नहीं।।३५६।।

पीते व्याधिर्भयं रक्ते नीले हानिं विनिर्दिशेत्।
नानावर्णोऽथ चेत्तस्मिन् सिद्धिश्च गीयते महान्।।३५७।।

शिवजी को पीतवर्ण में देखने से व्याधि, लालवर्ण में देखने से भय, नीलवर्ण में देखने से हानि और चित्र-विचित्र वर्णों में देखने से सिद्धि की प्राप्ति होती है ऐसा बड़े लोग कहते हैं।।३५७।।

इति काल प्रकरणं समाप्तम्।

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छायादर्शनफलम्

पदे गुल्फे च जठरे विनाशः क्रमशो भवेत्।
विनश्यतो यदा बाहू स्वयं तु म्रियते ध्रुवम्।।३५८।।

पाँव, गुल्फ और पेट आदि की छाया न दिखाई देने से या दोनों भुजाएँ न दिखाई दें तो आयु समाप्त हुई समझना चाहिये।।३५८।।

वामबाहुस्तथा भार्या नश्यत्येव न संशयः।
दक्षिणे बन्धुनाशो हि मृत्युमाप्तो विनिर्दिशेत्।।३५९।।

बाँयीं भुजा की छाया न दिखाई देने से भार्या का और दाहिनी भुजा की छाया न दिखाई देने से बन्धु आदि का और अपना भी नाश अवश्य होता है।।३५९।।

अशिरो मासमरणं विना जङ्घे दिनाष्टकम्।
अष्टाभिः स्कन्धनाशेन छायालोपेन तत्क्षणात्।।३६०।।

मस्तक की छाया यदि न दिखाई दे तो एक मास में, जाँघें और कन्धे न दिखाई देने पर आठ दिनों में और शरीर की छाया बिल्कुल न दिखाई देने पर उसी क्षण मृत्यु होती है।।३६०।।

प्रायः पृष्ठगते रवौ च निमिषाच्छायाङ्गुलीश्चाधरं
दृष्ट्वाऽर्द्धेन मृतिस्त्वनन्तरमहोच्छायां नरः पश्यति।
तत्कर्णांसकरास्य पार्श्वहृदयाभावेक्षणार्द्धात्स्वयं
दिङ्मूढो हि नरः शिरो विगमतो मासांस्तु षड् जीवति।।३६१।।

प्रात:काल सूर्य की ओर पीठ कर अपनी छाया को देखते हुए ओठ या अँगुली की छाया यदि न दिखाई दे तो एक निमेष में, छाया ही (सम्पूर्ण शरीर की) न दिखाई दे तो आधे निमेष में, कान, स्कंध, हाथ, मुख, पृष्ठभाग और हृदय की छाया न दिखाई दे तो आधे क्षण में और शिर की छाया न दिखाई दे तो उस घबड़ाये हुए पुरुष की मृत्यु छः महीनों के बाद होती है।।३६१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादिषोडशाहानिर्यदि भानुर्निरन्तरम्।
वहेद्यस्य च वै मृत्युः शेषाहेन च मासिकम्।।३६२।।

उस व्यक्ति की मृत्यु एक महीने में होती है, जिसका सूर्य स्वर सोलह दिन तक बराबर चलता हो।।३६२।।

सम्पूर्णं वहते सूर्यश्चन्द्रमा नैव दृश्यते।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्।।३६३।।

जिसका सूर्यस्वर ही बराबर चलता हुआ दिखाई दे और चन्द्रस्वर न दिखाई दे, उसकी मृत्यु एक पक्ष में होती है।।३६३।।

मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रवर्तते।
तदासौ चलितो ज्ञेयो दशाहे म्रियते ध्रुवम्।।३६४।।

जिसका मल, मूत्र और वायु एक साथ निकलता हो, उसका प्राण अस्थिर होता है और वह दस दिनों में मरता है।।३६४।।

सम्पूर्णं वहते चन्द्रः सूर्यो नैव च दृश्यते।
मासेन जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्।।३६५।।

कालज्ञों का मत है कि, हमेशा चन्द्रस्वर ही जिसका चलता है, उसकी मृत्यु एक मास में होती है।।३६५।।

अरुन्धतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि पदानि च।
आयुहीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम्।।३६६।।

ध्रुव, अरुन्धती, आकाश और मातृकामण्डल को न देख सकने वाला मनुष्य आयुहीन होता है।।३६६।।

अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमेव च।
भ्रुवौ विष्णुपदं ज्ञेयं तारकं मातृमण्डलम्।।३६७।।

अरुन्धती, जिह्वा, ध्रुव, नाक का अग्रभाग, आकाश, भौंहें और मातृमण्डल ताराएँ हैं।।३६७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवं ध्रुवं सप्तघोषं पञ्च तारां त्रिनासिकाम्।
जिह्वामेकदिनं प्रोक्तं म्रियते मानवो ध्रुवम्।।३६८।।

भौंहों की छाया न दिखाई दे तो नौ दिनों में, कानों को बन्द करने पर आवाज सुनाई न दे तो सात दिनों में, ताराएँ न दिखाई दें तो पाँच-दिनों में, नाक न दिखाई दे तो तीन दिनों में और जीभ न दिखाई दे तो एक दिन में मनुष्य की निश्चित मृत्यु होती है।।३६८।।

कोणावक्ष्णमोरङ्गुलीभ्यां किञ्चित्पीड्य निरीक्षयेत्।
यदा न दृश्यते विन्दुर्दशाहेन भवेन्मृतिः।।३६९।।

आँखों के दोनों कोने के उँगलियों से मिलकर चमकीले बिंदु (तारे) न दिखाई देने से दस दिनों में मृत्यु होती है।।३६९।।

तीर्थस्नानेन दानेन तपसा सुकृतेन च।
जपैर्ध्यानेन योगेन जायते कालवञ्चना।।३७०।।

तीर्थ स्नान, दान, तप, सुकृत, जप, ध्यान, योग आदि द्वारा काल से छुटकारा मिलता है।।३७०।।

शरीरं नाशयन्त्येते दोषा धातुमलास्तथा।
समस्तु वायुर्विज्ञेयो बलतेजोविवर्द्धनः।।३७१।।

दुराचरण, धातु एवं मल दोष आदि शरीर का नाश करते हैं। सम प्राण वायु, बल और तेज की वृद्धि करता है।।३७१।।

रक्षणीयस्ततो देहो यतो धर्मादिसाधनम्।
योगाभ्यासत्वमायान्ति साध्या जप्यास्तु साध्यताम्।।
असाध्या जीवितं घ्नंति न तत्रास्ति प्रतिक्रिया।।३७२।।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन शरीर होने के कारण इसकी रक्षा करना आवश्यक है। शारीरिक दोषों एवं रोगों को योगाभ्यास से दूर करना चाहिये। अन्यथा उक्त रोग असाध्य होकर किसी भी उपाय से दूर नहीं हो सकते और रोगी को मारते हैं।।३७२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

येषां हृदि स्फुरति शाश्वतमद्वितीयं
तेजस्तमोनिवहनाशकरं रहस्यम्।
तेषामखण्डशशिरम्यसुकांतिभाजां
स्वप्नेऽपि नो भवति कालभयं नराणाम्।।३७३।।

जिसको नित्य, अद्वितीय और तम (अज्ञान) नाशक [illegible] ज्ञात होता है, उस चन्द्र की तरह प्रकाशमान् पुरुष को स्वप्न में भी मृत्यु का भय नहीं होता है॥३७३॥

इडा गङ्गेति विज्ञेया पिङ्गला यमुना नदी।
मध्ये सरस्वती विद्यात्प्रयागादि समस्तथा।।३७४।।

इडा गंगा, पिंगला यमुना, सुषुम्ना सरस्वती नदी और शरीर को प्रयाग के सदृश समझना चाहिये॥३७४॥

आदौ साधनमाख्यातं सद्यः प्रत्ययकारकम्।
बद्धपद्मासनो योगी बन्धयेदुड्डियानकम्।।३७५।।

पहले प्रत्यक्ष फल दिखाने वाले साधन को कहा गया अब पद्मासन लगाकर योगाभ्यासी मनुष्य उड्डियान (अपान वायु को नाभी के समीप स्थित करने वाली) क्रिया की साधना करे॥३७५॥

पूरकः कुम्भकश्चैव रेचकश्च तृतीयकः।
ज्ञातव्यो योगिभिर्नित्यं देहसंशुद्धिहेतवे।।३७६।।

योगियों को शरीर शुद्धि के लिये पूरक, कुम्भक और रेचक प्राणायामों को जानना चाहिये। (पूरक-श्वास को खींचना, कुम्भक-श्वांस को भीतर स्थिर करना, रेचक-श्वांस को छोड़ना इस प्रकार प्राणायाम की तीन क्रियाएँ होती हैं)॥३७६॥

पूरकः कुरुते वृष्टिं धातुसाम्यं तथैव च।
कुम्भके स्तम्भनं कुर्याज्जीवरक्षा-विवर्द्धनम्।।३७७।।

शरीर में पूरक प्राणायाम अमृत वृष्टि करता है। और धातुओं की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ममता रखता है। कुम्भक से शरीर की स्थिति स्थिर रहती है। इससे जीवों की रक्षा वृद्धिगत होती है।।३७७।।

रेचको हरते पापं कुर्याद् योगपदं व्रजेत्।
पश्चात्संग्रामवत्तिष्ठेल्लयबन्धं च कारयेत्।।३७८।।

रेचक प्राणायाम से पाप नष्ट होते हैं। इस तरह तीनों प्राणायाम करने से योग-पद की प्राप्ति होती है। प्राणायाम के बाद स्थिर चित्त होकर लय-बन्ध करने में (मृत्यु के हराने में) समर्थ होता है।।३७८।।

कुम्भयेत्सहजं वायु यथाशक्ति प्रकल्पयेत्।
रेचयेच्चन्द्रमार्गेण सूर्येण पूरयेत् सुधीः।।३७९।।

बुद्धिमान् को अपने प्राण को यथाशक्ति सूर्यस्वर के मार्ग से खींचकर भीतर स्थिर रखकर और चन्द्रमार्ग से छोड़ देना चाहिये।।३७९।।

चन्द्रं पिबति सूर्यश्च सूर्यं पिबति चन्द्रमाः।
अन्योन्यकालभावेन जीवेदाचन्द्रतारकम्।।३८०।।

पारम्परिक काल की अवधि से रहित होकर सूर्यस्वर से चन्द्र स्वर, चन्द्रस्वर से सूर्यस्वर पीने वाला मनुष्य जब तक चन्द्र, तारा आदि रहते हैं, तब तक जीवित रहता है।।३८०।।

स्वीयाङ्गे वहते नाडी तन्नाडीरोधनं कुरु।
मुखबन्धममुञ्चन् वै पतनं जायते युवा।।३८१।।

शरीर में बहने वाली नाड़ी को रोक कर मुख से भी श्वांस को रोकने वाला वृद्ध भी युवक होता है।।३८१।।

मुखनासाक्षिकर्णान्तानङ्गुलीभिर्निरोधयेत्।
तत्त्वोदयमिति ज्ञेयं षणमुखीकरणं प्रिये!।।३८२।।

हे प्रिये! मुख, नाक, आँख और कान को हाथों की उँगलियों से बन्द करने की क्रिया को षणमुखीकरण कहा जाता है और इससे तत्त्वों का ज्ञान होता है।।३८२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तस्य रूपं गतिः स्वादो मण्डलं लक्षणं त्विदम्।
स वेत्ति मानवो लोके संसर्गादपि मार्गवित्।।३८३।।

तत्त्वों के रूप, गति, स्वाद, मण्डल आदि लक्षण षण्मुखीमुद्रा के अभ्यास के द्वारा जाना जाता है। स्वरों के मार्गों को जानने वाला ज्ञात करता है।।३८३।।

निराशो निष्कलो योगी न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।
वासनामुन्मनां कृत्वा कालं जयति लीलया।।३८४।।

आशा रहित एवं पाप रहित योगी वासना से रहित होकर किसी भी विषय की चिन्ता न कर मृत्यु को लीला से जीतता है।।३८४।।

विश्वस्य वेदिकाशक्तिर्नेत्राभ्यां परिदृश्यते।
तत्रस्थं तु मनो यस्य याममात्रं भवेदिह।।३८५।।

योगी का चित्त एक पहर के लिए भी स्थिर हो जाय तो उसकी आँखों द्वारा संसार को जानने की शक्ति प्राप्त होती है।।३८५।।

तस्यायुर्वर्धते नित्यं घटिकात्रयमानतः।
शिवेनोक्तं पुरा तन्त्रे सिद्धस्य गुणगह्वरे।।३८६।।

ऐसे योगी की आयु तीन घटिका प्रतिदिन के हिसाब से बढ़ती है। सिद्धों के गुणों का खान ऐसे तन्त्र में शिवजी ने कहा है।।३८६।।

बद्धं पद्मासनस्थो गुदगतपवनं सन्निरुद्ध्याप्तमुच्चै-
स्तंतस्यापानरन्ध्रक्रमजितमनिलं प्राणशक्त्या निरुद्ध्य।
एकीभूतं सुषुम्ना विवरमुपगतं ब्रह्मरंध्रे च नीत्वा
निक्षिप्याकाशमार्गे शिवचरणरता यान्ति ते केऽपि धन्याः।।३८७।।

वे धन्य हैं, जो पद्मासन लगाकर अपान वायु को रोककर ऊपर ले जाकर अपान रंध्र से क्रमशः जाती हुई इस वायु को प्राणवायु से रोक कर उन दोनों को एक रूप कर बाद में सुषुम्ना रन्ध्र में से ले जाकर ब्रह्मरन्ध्र में ले जाते हैं। वे शिवभक्त योगी मरणोपरान्त आकाश मार्ग से शिवधाम को जाते हैं।।३८७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतज्जानाति यो योगी एतत्पठति नित्यशः।
सर्वदुःखविनिर्मुक्तो लभते वाञ्छितं फलम्।।३८८।।

जो इस स्वर शास्त्र को जानता है और पाठ करता है वह दुःखों से रहित होकर इच्छितफल प्राप्त करता है।।३८८।।

स्वरज्ञानं नरे यत्र लक्ष्मीः पादतले भवेत्।
सर्वत्र च शरीरेऽपि सुखं तस्य सदा भवेत्।।३८९।।

स्वर ज्ञानी की दासी लक्ष्मी होती है और उसे सदा शारीरिक सुख प्राप्त होता है।।३८९।।

प्रणवः सर्ववेदानां ब्राह्मणो भास्करो यथा।
मृत्युलोके तथा पूज्यः स्वरज्ञानी पुमानपि।।३९०।।

जैसे सभी वेदों में ओंकार, ब्राह्मण और सूर्य पूज्य हैं वैसे ही मृत्यु लोक में स्वरज्ञानी पुरुष श्रेष्ठ और पूज्य हैं।।३९०।।

नाडीत्रयं विजानाति तत्त्वज्ञानं तथैव च।
नैव तेन भवेत्तुल्यं लक्षकोटिरसायनम्।।३९१।।

तीनों नाड़ियों एवं तत्त्वों के ज्ञान के समान एक कोटि रसायन भी नहीं होते।।३९१।।

एकाक्षरप्रदातारं नाडीभेदविवेचनम्।
पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्दत्वा चाऽनृणो भवेत्।।३९२।।

इस स्वर शास्त्र के एक भी अक्षर का ज्ञान देने वाले गुरु के ऋण से मुक्त होने के योग्य इस संसार में कोई भी द्रव्य नहीं है।।३९२।।

स्वरस्तत्त्वं तथा युद्धं देविवश्यं त्रयस्तथा।
गर्भाधानं च रोगश्च कलार्द्धेनैव मुच्यते।।३९३।।

इस स्वर शास्त्र में स्वर तत्त्व, युद्ध, स्त्री-वशीकरण, गर्भाधान तथा रोग आदि बातों का वर्णन आधी कला से ही किया गया है।।३९३।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एवं प्रवर्तितं लोके प्रसिद्धः सिद्धयोगिभिः।
चन्द्रार्कग्रहणे जाप्यं पठतां सिद्धिदायकम्।।३९४।।

सिद्धों और योगियों ने इसे लोगों में प्रचलित किया है और सूर्य या चन्द्र ग्रहण में इसका पाठ सिद्धि को देने वाला है।।३९४।।

स्वस्थाने तु समासीनो निद्रां चाहारमल्पकम्।
चिन्तयेत्परमात्मानं यो वेद स भविष्यति।।३९५।।

निद्रा और आहार को अल्प मात्रा में सेवन करता हुआ आसन पर स्थित योगी परमात्मा का चिन्तन करे और उसको जाने। इससे योगी ज्ञानी होता है।।३९५।।

इति शिवस्वरोदयः समाप्तः।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिवपञ्चाक्षर-स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।१।।

मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय
नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।२।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षा-ऽध्वर-नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।३।।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य-
मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।५।।

पञ्चाक्षरमिद पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदतें।।६।।

इति शिवपञ्चाक्षर-स्तोत्रं समाप्तम्।

*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान-निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद-स्वरूपम्।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकारमाकाशवासं भजेऽहम्।।१।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिराज्ञान-गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल-कालं कृपालं
गुणागार-संसार-पारं नतोऽहम्।।२।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं गभीरं
मनोभूत-कोटि-प्रभासी शरीरम्।
स्फुरन्मौलि-कल्लोलिनी चारुगङ्गा
लसद्भाल-बालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा।।३।।
चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम्।
मृगाधीश-चर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेश-
मखण्डं भजे भानुकोटि-प्रकाशम्।
त्रयीशूल - निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।५।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिदानन्द-सन्दोह-मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो! मन्मथारिः।।६।।
न यावदुमानाथ-पादारविन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत् सुखं शान्ति-सन्ताप-नाशं
प्रसीद प्रभो! सर्वभूताधिवास!।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा देव तुभ्यम्।
जरा-जन्म-दुःखौघ-तातप्यमानं
प्रभो! पाहि शापान्नमामीश शम्भो!।।८।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।

इति श्रीगोस्वामि-तुलसीदासकृत-रुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

*

शिवरामाष्टकम्

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविधतापनिवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।१।।
कमललोचन राम दयानिधे हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शङ्कर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।२।।
स्वरजनरञ्जन मङ्गल-मन्दिरं भजति तं पुरुषं परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।३।।
जय युधिष्ठिर-वल्लभ भूपते जय जयाऽर्जितपुण्यपयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।४।।
भवविमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।५।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अवनिमण्डलमङ्गल मापते जलदसुन्दर राम रमापते।
निगम-कीर्ति-गुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।६।।
पतित-पावन-नाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।७।।
अमरता परदेव रमापते विजयतस्तव नाम धनोपमम्।
मयिकथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।८।।
हनुमतः प्रिय चापकरं प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।९।।
नरहरेति परं जनसुन्दरं पठति यः शिवरामकृतस्तवम्।
विशति रामरमाचरणाम्बुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।१०।।

प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः।
विजयो जायते तस्य विष्णुसान्निध्यामाप्नुयात्।।११।।

इति श्रीरामानन्दविरचितं शिवरामाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीविश्वनाथाष्टक

दोहा–द्वादशलिंग प्रधान प्रभु, विश्वनाथ महराज।
महिमा कहि कहि जासु गुण, राख्यो सकल समाज।।

छंद–

कैलासवासि नमामि हे प्रभु! आदि शम्भु सदाशिवम्,
मणिरूप चन्द्र अनूप मस्तक जटाजूट सुशोभितम्।
नर मुण्ड माल विशाल राजत गले गरल विभूषितम्,
भय पापमोचन विमल मानस वृषभवाहन मोदितम्।।१।।
हर वृषध्वज कर गहे डमरू बाघ चर्म कलेवरम्,
जय भस्म अङ्ग समस्त छाये विश्वनाथ स्वभावकम्।
पुनि कामदेव सुताड़ि तोष्यो नाद बिन्दु संयोगकम्,
जगजननि गंगा वहति लटसों पञ्चमुख अघमोचनम्।।२।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुरगण सुपूजित भाल शशिधर लोचनं त्रयलोचनम्,
इह नगर काशी लिंग द्वादश ज्योति लिंग विशेषकम्।
मणिधर फणीन्द्र विराज माला मालती मनमोहनम्,
है धूप दीप निवेदितं प्रभु विश्वनाथ सुसोहनम्।।३।।
जहँ कनक कलश विराज मन्दिर करण कुण्डल मण्डितं,
अरु मुकुट क्रीट सुहार मुक्ताकार मुनि मन रंजितम्।
हे गौर वर्ण सुगौर शशिधर इन्दु शशिधर शोभितम्,
हे विश्वनाथ सनाथ दीनानाथ सुर मन मोहितम्।।४।।
प्रभु गन्ध मादन शैल बैठहिं योग आसन आसनम्,
जय मदन दाहक मदन चाहक नाथ मदन सुसोहनम्।
तुम अरध अंग सुअंग धारौ शैलजा मन भावनम्,
प्रभु विश्वनाथ सुक्षत्रधारन चरन कमल सुवासनम्।।५।।
करि ध्यान गावहिं नारदादि बखान चरित मनोहरम्,
हर प्राण अखिल कुपात्र दानव अभय प्रभु विश्वेश्वरम्।
वह त्रिपुर दैत्य सुदैत्य आदिक लहेउ फल शशि शेखरम्,
तुम होश करि निजलोक भेजे महादुष्ट क्षमाकरम्।।६।।
हे नाथ अपनी बुद्धि दूषण कबहुँ नाम मनोहरम्,
नहिं लिया पामर जाय रक्षा नाथ हे विश्वम्भरम्।
सब जगत् कर कल्यान कीन्हों नाम पाय सुशंकरम्,
हर मोर कुबुद्धि सुविमलबुद्धि दे नाथ हर मम मत्सरम्।।७।।
धनुबान करि गहि भानु रघुकुल ध्यान जासु विराजितम्,
शिव परम भक्त सुभागवत कहि योगिनं जेहि सेवितम्।
करि कर्म्म षट नहिं सकत लहि वह नाथ देत प्रमाणितम्,
प्रभु आशुतोष सुतोष कीन्हों विश्व नौमि नमामि तम्।।८।।

इति विश्वनाथाष्टक सम्पूर्ण।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिवस्तुति-चालीसा

दोहा– जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देउ अभय वरदान।।

चौपाई–

जै गिरिजापति दीनदयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के।।
अंग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै। छवि को देख नाग मुनि मोहै।।
मैना मातु कि हवें दुलारी। वाम अंग सोहत छवि न्यारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करें सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दि गणेश सोहैं तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा। तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा।।
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।।
तुरत षडानन आप पठायउ। लव निमेष महँ मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा करि लीन बचाई।।
किया तपहिं भगीरथ भारी। पुरेउ प्रतिज्ञा तासु पुरारी।।
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं। सेवक अस्तुति करत सदाहीं।।
वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रगटी दधि मन्थन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये बिहाला।।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नीलकण्ठ तव नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा जबहिं पुरारी।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक कमल प्रभु राखेउ गोई। कमल नयन पूजन चहँ सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिये इच्छित वर।।
जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सबके घट वासी।।
दुष्ट सकल नित मोहिं सतावै। भ्रमत रहे मोहिं चैन न आवै।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहिं आन उबारो।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहिं आन उबारो।।
मातु पिता भ्राता सब होई। संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी ।।
धन निरधन को देत सदा हीं। जो कोइ जाँचे सो फल पाहीं।।
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर हो संकट के नाशन। विघ्न विनाशन मंगल कारन।।
योगी यती मुनि ध्यान लगावैं। शारद नारद शीश नवावैं।।
नमो नमो जय नमो शिवाये। सुर ब्रह्मादिक पार न पाये।।
जो यह पाठ करै मन लाई। ता पर होत हैं शंभु सहाई।।
ऋनिया जो कोइ हो अधिकारी। पाठ करे सो पावनहारी।।
पुत्रहीन इच्छा कर जोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पंडित त्रयोदशी को लावै। ध्यान पूर्वक होम करावै।।
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। ताके तन नहिं रहे कलेशा।।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। शंकर सन्मुख पाठ सुनावै।।
जन्म - जन्म के पाप नशावै। अन्तवास शिवपुर में पावै।।
कहैं अयोध्यादासतुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।

दोहा–नित्य नेम करि प्रातहीं, पाठ करें चालीस।
तुम मेरी मनकामना, पूर्ण करहु जगदीश।।
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, सम्वत् चौंसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्यान।।

इति श्रीशिव चालीसा समाप्त।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीशिवजी की आरती

शीशगङ्ग अर्द्धङ्ग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नन्दी भृङ्गी नृत्य करत हैं गुण भक्तन शिव की दासी।।१।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्तस्वर रागरागिनी मधुराशी।।२।।
यक्ष रक्ष भैरव जहँ डोलत बोलत हैं वन के बासी।
कोमल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमर करत हैं गुञ्जासी।।३।।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहँ डोलत करत फिरत हैं भिक्षासी।।४।।
सूर्यकान्ति सम पर्वत शोभित चन्द्रकान्ति सम हिमरासी।
छहों तो ऋतु नित फलत रहत हैं पुष्प चढ़त हैं वर्षासी।।५।।
देव मुनिजन की भीड़ पड़त है निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा विष्णु ज्याको ध्यान धरत हैं कछु शिव हमको फरमासी।।६।।
ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर सदा आनन्दित सुखरासी।
निष्काम सुमिरन सेवा करते टूट जाय यम की फाँसी।।७।।
त्रिशूलधरजी को ध्यान निरन्तर मन लगाय कर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तनु को जन्म-जन्म शिवपद पासी।।८।।
कैलासी काशी के वासी अविनाशी मेरी सुध लीज्यो।
सेवक जान सदा चरनन को अपना जान दरश दीज्यो।।९।।
तुम तो प्रभुजी सदा सयाने अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर किङ्कर की विनती सुनियो।।१०।।

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आरती श्रीशंकरजी की

ॐ जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा - विष्णु - सदाशिव अर्धाङ्गी धारा। टेक।
एकानन चतुरानन पंचानन साजै।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे। जय..
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहै। जय..
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद सोहै भालै शशिधारी। जय..
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे। जय..
कर मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधर्ता।
जग कर्ता जग भर्ता जग संहार कर्ता। जय..
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों एका। जय..
त्रिगुण स्वामीजी की आरति जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पत्ति पावै। जय..

卐

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी— २२१००१

मुद्रक—भार्गव प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

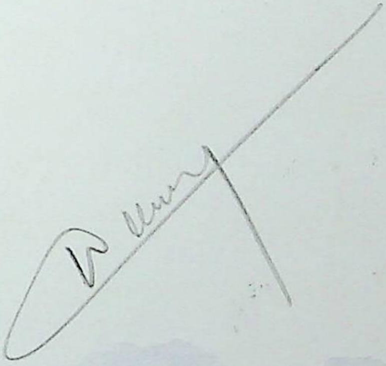

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh